—यह पुस्तक निम्न पतों से भी प्राप्य है —

१—श्री बदरीप्रसाद साकरिया, नाहटों की गुवाड़ बीकानेर।

२—श्री अभय जैन पुस्तकालय, नाहटों की गुवाड़ बीकानेर।

३—किताब-घर पो० जोधपुर (राजस्थान)

४—नवयुग-ग्रन्थ-कुटीर, पो० बीकानेर (राजस्थान)

५—रतनचन्द हजारीमल पो० हाथरस (यू० पी०)

—यह पुस्तक निम्न पतों से भी प्राप्य है —

१—श्री बदरीप्रसाद साकरिया, नाहटों की गुवाड़ बीकानेर।

२—श्री अभय जैन पुस्तकालय, नाहटों की गुवाड़ बीकानेर।

३—किताब—घर पो० जोधपुर (राजस्थान)

४—नवयुग—ग्रन्थ—कुटीर, पो० बीकानेर (राजस्थान)

५—रतनचन्द हजारीमल पो० हाथरस (यू० पी०)

राजस्थानी भाषा और साहित्य

के अनन्य भक्त एवं विद्वान इटली निवासी

स्वर्गीय डा० एल० पी० टेसीटोरी

को

सादर भेंट

हजारीमल बांठिया प्रकाशक	टेसीटोरी दिवस २२-११-५६	बद्रीप्रसाद साकरिया लेखक

डा० एल० पी० टैसीटोरी

जन्म—
१३ दिसम्बर १८८७ ई०
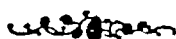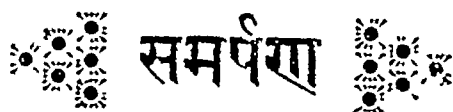
निर्वाण—
२२ नवम्बर १९१९ ई०
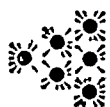
समर्पण

राजस्थानी भाषा और साहित्य

के अनन्य भक्त एवं विद्वान इटली निवासी

स्वर्गीय डा० एल० पी० टेसीटोरी

को

सादर भेंट

हजारीमल बांठिया प्रकाशक	टेसीटोरी दिवस २२-११-५६	बदरीप्रसाद साकरिया लेखक

प्रथमावृत्ति १

मूल्य सवा रुपया

मुद्रक—नाथूराम गुप्ता
गुप्ता प्रिंटिंग प्रेस, बनारस।
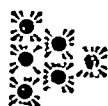
दो शब्द

श्री बद्रीप्रसाद साकरिया ने 'अनोखी आन' शीर्षक इस छोटी सी पुस्तक में राजस्थान की पावन भूमि के एक ऐसे वीर का परिचय दिया है जिसने राजस्थान के सुविदित वीरता के आदर्श का मान दृढ ऊँचा उठाया। वीर तोगाजी कोई साधारण राजपूत थे। इतिहास ने उनके विषय में प्रामाणिक तथ्यों की रक्षा लिखित रूप में नहीं की, किन्तु लोक-कंठ में तोगाजी की कीर्त्ति इस दोहे के रूप में आजतक सुरक्षित है—

कटारी अमरेस री, तोगारी तरवार।
हाथल रायासिंघरी, दिल्ली रै दरबार ॥

उपर्युक्त दोहे में अमरसिंह की कटारी और हलवद (सौराष्ट्र) के राजा रायसिंह की हथेली के बल का परिचय जो उन्होंने शाही दरबार में दिया था, इतिहास में सुविदित है। किन्तु तोगा राठौर का कहीं पता नहीं लगता, पर जब दो इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियों का उल्लेख दोहे में आया है तो विश्वस्त अनुमान होता है कि लोक साहित्य के तोगाजी राठौर और उनकी वीराङ्गना पत्नी भटियानीजी भी ऐतिहासिक व्यक्ति होने चाहिये। किन्तु सत्य तो यह है कि लोक साहित्य ने जिन रण-बाङ्कुरे सूरमा वीरों को अमर बनाया है उनमें ही उसके द्वारा तोगाजी राठौर को भी गिना गया। लोक-साहित्य की यह श्रद्धाञ्जलि भी तोगाजी की सच्ची अमरता और उनके वीर-धर्म की सच्ची मान्यता है। उनकी

जाता है साथ ही इस कर्त्तव्य-पथ की बाधाएँ हटाने के लिए उसे चाहे जितने काँटों को उखाड़ना पड़े, चाहे जितने प्रतिपक्षियों का कंठ निकृ-न्तन करना पड़े उसे भय नहीं होता और न वह पीछे पैर रखता है।

जो वीर-रस भगवान का साक्षात् रूप है जिसमें दैवी आलोक दिव्य अंश का प्रत्यक्ष दर्शन मिलता है, वह तो सत्य और धर्म के आदर्श की स्थापना के लिए होता है। इस आदर्श की पूर्ति के लिए युद्ध और युद्ध जनित हिंसा आवश्यक हो तो भले ही हो, मनुष्य को इसके लिए भी तैयार रहना चाहिए। किन्तु वीर के हृदय का तेज तो कायरता का जीत लेने में है। मृत्यु के भय से डरने का नाम कायरता है। कायर की मृत्यु नहीं हुई तो पर वह सदा उससे डरता रहता है और उस भय के कारण कर्त्तव्य पथ से बचने के उपाय सोचता रहता है। पर सच्चा वीर क्षण भर के लिए भी मृत्यु से डरकर कर्तव्य से विमुख नहीं होता और न तिल भर भी उस पथ से डिगता है जो उसे सच्चा सूझता है। हृदय की इसी दृढ़ता का नाम वीरता है। मानव-जीवन के लिए और समाज के लिए ऐसी वीरता की उतनी ही आवश्यकता और मूल्य है जितनी अन्य सद्गुणों की जिन्हें भगवान ने अपनी गुण-सृष्टि में उत्पन्न किया है। भाव-सृष्टि में वीरता इसी प्रकार की भावना का नाम है जो जीवन के गुणवान पक्ष की स्थापना और रक्षा के लिए कर्म प्रवृत्त होती है और जिसका फल हम वीर के स्थूल जीवन में देखते हैं। सांगाजी के चरित्र में सांगाजी से भी बढ़कर उनकी भटियानीजी के हृदय की वीरता है। भटियानी जी दैवीगुणों के और भी उच्च धरातल पर शोभती हैं। उन का जीवन जिस आलोक से प्रकाशित है उसकी रश्मियां विचारों के और भी महत्तर स्रोत से निकलती हैं। सांगाजी का मन भी जहां कच्चा पड़ता है वहां वे उसे सम्हालती हैं। कहानी के प्रसङ्ग में सांगाजी और उनके वीर सरदार सीर को आगरे भेजकर बारह मास की अवधि बढ़वा लेना चाहते हैं किन्तु भटियानी का दिव्याग्नि-दग्ध मन कहीं अधिक परिपक्व हो चुका

लेखक ने मुझे यह भी सूचित किया है कि 'तिलोकसीरी ख्यात' और 'जो सी री ख्यात' नामक दो अप्रकाशित इतिहास के मारवाड़ी में लिखे ग्रन्थोंमें तोगाजीका वर्णन सुनाजाता है। ये ग्रन्थभी राजस्थान में उपलब्ध हैं पर प्रकाश में नहीं आये हैं। आशा है राजस्थान के इतिहास के क्षेत्र में काम करने वाले विद्वान इस ओर ध्यान देंगे। श्री नरोत्तमदास स्वामी का कथन है कि तोगे का वर्णन उन्होंने दयालदास की ख्यात में कहीं पढ़ा है, पर वह स्थल अप्रकाशित अ श में है। अमरसिंह की कटारी, तोगारी तरवार और रायसिंह की हथेली—ये तीनों बातें अलग-अलग किन्तु एक ही पुस्तक में गुजराती में बहुत पहले छप भी चुकी हैं। दूहा भी वही है। कथा का मूलरूप गुजराती और राजस्थान में एक ही है। वर्णन-शैली और संबन्धित घटनाओं में कुछ अन्तर है जिनका तुलनात्मक अध्ययन भारतीय लोक-साहित्य का रोचक विषय है।

भटियानी जी मारवाड़ में दो तीन हो चुकी हैं। उनकी या उनमें से किसी एक देवी की भांति मारवाड़ में पुत्र-प्राप्ति के लिए पूजा की जाती है। एक भटियानी जोधपुर के राव मालदेवजी की पत्नी रूठी रानी ऊमादे थी जो इतिहास प्रसिद्ध है। रावजी का एक गोली के साथ अनुचित सम्बन्ध विवाह के समय ही हो जाने के कारण भटियानी जन्म भर अपनी पति से रूठी रही और मरने पर सती हो गई। एक दूसरी ऊमां नाम की और जो किसी खीची सरदार या राजा को ब्याही गई थी जिसके सम्बन्ध में एक दूहा प्रसिद्ध है—

ऊमां कागद मेलिया, भूमां वेगी आव।
दुख सुख मेला काढसां, रूठो खीची राव॥

एक और भी भटियानी जसोल (मारवाड़) जागीरदारों के पुरखाओं की पत्नी सुनने में आई है और उसके सम्बन्ध में भी कहा जाता है कि वह ठाकुर के साथ सती हो गई थी।

सती हो जाना तो उस समय का साधारण रिवाज था पर सतियों की इस प्रकार पूजा नहीं होती जिस प्रकार अखियाली की। अतएव ज्ञात होता है कि ठागाजी की पत्नी अखियाली ही अपने विलक्षण बलिदान के कारण ही यह कीर्ति पा सकी जिससे उसकी देवी के रूप में पूजा होने लग गई। अखियालीजी की मान्यता उत्तर गुजरात और काठियावाड़ आदि प्रदेशों में भी बहुत है। वे भमीण की अखियाली की जात देने (उनके पुत्रजन्म की यात्रा के लिए) बड़ी संख्या में आते हैं। जालोर में और मारवाड़ के कई स्थानों में अखियालीजी के थान (देवलियां) बने हुए हैं। अखियाली के लिए महाराज गजसिंह की यह उक्ति चरितार्थ हुई—

'सूरज चन्द्रमा है जठै तांई आपरो नाम अमर रहसी'।

श्री अगरचन्दजी नाहटा की प्रेरणा से इस पुस्तक के लिए 'दो शब्द' लिख कर मैं प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ।

काशी विश्वविद्यालय
१-७-६१

वासुदेवशरण अग्रवाल

(मारवाड़ी) और राजस्थानियों को हिन्दी का स्वत अभ्यास होजाता हैं। मारवाड़ी भाषा तथा फारसी अरबी भाषा के शब्दों के अर्थ प्रत्येक पृष्ट के फुटनोट में दिया जाना चाहिये था। पर कुछ असुविधाओं के कारण वैसा नहीं होसका। अत मारवाड़ी शब्दा का पृष्टांक सहित कोश ग्रन्थ के अन्त में दिया गया है।

पुस्तक हाथरस में छपने के कारण कुछ अशुद्धिया भी रह गई हैं जिनका शुद्धि पत्र भी दे दिया गया है।

ग्रन्थ को रोचक बनाने एव कहानी कारों की परिपाटी को कायम रखने के लिए कहानीकारों के मुह से सुने हुए पद्यों के अतिरिक्त पद्य और गीत लेखक ने स्वयं बना कर अथवा संग्रह कर दिये हैं। पृ० १२ की लोरी, पृ० २२ की ब्रह्म महिमा और पृ० ६६ का देशमहिमा गायन लेखक के स्वयं रचित हैं पृ० ४६ का प्रथम-मिलन के अवसर का सौभाग्य और उसके सूचक अलङ्कारों का महत्त्वपूर्ण भावप्रदर्शक लोकगीत श्रीसाकरियाजी की धर्म पत्नी ने लिखवाया है और हिन्दू मुसलमानों की एकता सूचक सुन्दर गीत को लेखक ने गुजराती गीत का हिन्दी अनुवाद दिया है। ये सभी गायन अत्यन्त मोहक राग-रागिनियों के और भावपूर्ण है।

आज भारत स्वतन्त्र हो चुका है। राजाओं की वह शान-बान अब नहीं रही। इस ग्रंथ में प्राचीन समय की शान के अनेक चित्र यथास्थान मिलेंगे, जो इतिहास की अतीत घटनाओं के रूप में विशेष उल्लेखनीय हैं। इसमें कोई शक नहीं कि इसी शान-बान के साथ लेखक अथवा कहानीकार नें महाराजा गजसिंह को एक बहुत ऊचे दर्जे का प्रामाणिक शासक सिद्ध किया है जिनके कि साहस से लोगा और भटियाणी जैसे देवरत्न प्रकाश में आ पाये हैं।

ग्रंथ की कथावस्तु बहुत रोमांचकारी और आकर्षक है। आदर्शमाता पुत्रवधू, पुत्र, पिता और राजा का वर्णन बहुत ही सुन्दर हुआ है। नारी जाति जो आज बहुत हीन दृष्टि से अबला और बुद्धिहीन मानी जाती है

इस कथानक से प्रेरणा प्राप्त कर अपने कर्म को समझें। क्योंकि सत्साहस वीरता, कर्तव्यपरायणता धर्मप्रेम पतिभक्ति, देशभक्ति, त्याग कुल और वंश की गौरव वृद्धि के लिए पुरुष जाति को कर्तव्यमार्ग में आगे बढ़ने की प्रेरणा देना और कर्तव्य पथ पर अपने प्राणों को हँसते हँसते न्योछावर कर देना ये सभी एक आदर्श वीर सती नारी के रूप में बहुत ही दर्शनीय है। सांगा जी की पत्नी भटियाणीजी में ये सभी सद्गुण मूर्तिमान हो रहे हैं।

राजस्थान की नारियों का वैशिष्ट्य अपना निराला है जिस प्रकार जौहर और पति सहगमन की सती प्रथा के उदाहरण राजस्थान के समान अन्यत्र नहीं मिल सकेंगे उसी प्रकार हिन्दी और राजस्थानी भाषा की कवियत्रियों की संख्या भी राजस्थान के जितनी अन्यत्र नहीं मिल सकेगी सतियों और देवियों के रूप में उनकी पूजा भी राजस्थान में खूब प्रचलित है। अनेकों प्रेम कथाओं में भी उनके आदर्श और उत्कट प्रेम की कहानियां जिस रूप में पाई जाती हैं अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी वीरता पति और पुत्रों को युद्ध में अग्रसर होकर अद्भुत वीरता से लड़ते हुये मर मिट जाने की अनोखी प्रेरणा और उनके पीछे बलिदान हो जाने की भावना, राजस्थान की नारियों की बहुत ही उदात्त है। पर बहुत ही खेद की बात है कि राजस्थानी वीरांगनाओं की जीवन गाथाएं अभी उस रूप में प्रकाश में नहीं आ सकी है। थोड़ी सी वीरांगनाएं और कवयित्रियें ही प्रसिद्धि प्राप्त है।

अन्त में यह आशा करते हुये कि जैसाजी और भटियाणी जी जैसी राजस्थान की विभूतियां शीघ्र ही अधिकाधिक प्रकाश में आने की प्रेरणा इस ग्रन्थ से मिले और राजस्थान का वास्तविक गौरव विश्व-विश्रुत बने। इन शब्दों के साथ वक्तव्य समाप्त की जाती है।

बीकानेर　　　　　　　　　　अगरचन्द नाहटा

१।२।६९

व्यक्ति जितना कर सकता है निकटवर्ती उतना नहीं कर पाता। क्यों कि उसकी विशेषताओं का अनुभव अपनेपन के नाते उसे कम होता है। राजस्थानी वीरों के सम्बन्ध में बङ्गाली लेखकों का जो आकर्षण रहा वह उल्लेखनीय बात है। उनके इन बङ्गला ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद हुआ। पर राजस्थान के रहने वालों ने सीधा और समर्थ रूप से उन वीरों को लोक व्यापी बनाने का वैसा प्रयत्न नहीं किया। इसी प्रकार गुजरात के लेखकों ने चारणों आदि से मौखिक रूप में लोक गाथाओं को सुन कर अच्छे से अच्छे रूप में जनभोग्य बनाने के लिए जितनी जल्दी और तेजी से काम किया उतना राजस्थान निवासियों ने नहीं किया।

प्रस्तुत वीर गाथा विविध व्यक्तियों के मुख से सुन कर कोई तीस वर्ष पहले श्री साकरिया जी ने लिखी थी। उनको सुनाने वालों में से कई व्यक्ति अब विद्यमान न रहे होंगे। इस तरह न मालूम कितना महत्त्व पूर्ण मौखिक साहित्य नष्ट होचुका होगा। अब भी जो बड़े-बूढे बच पाये हैं उनकी श्रुति परम्परा को लिपिबद्ध नहीं किया गया तो थोड़े वर्षों बाद वह भी शेष हो जायगा। इस कहानी को कहने वाले व्यक्तियों की स्मृति बनाये रखना आवश्यक समझकर श्री साकरियाजी की नोट बुक में जिन जिन स्थानों के जिन जिन व्यक्तियों के नाम दर्ज हैं उनकी नामावली नीचे दी जा रही है—

१ बानर अख जी गाव चिड़िया (मालानी प्रांत, मारवाड़) 'तोगारी तलवार लो, हीराबाई रो हार लो। नामक लोकोक्ति की कहानी में भटियानी का नाम हीरांबाई बताया।

यह एक बालिकाओं का खेल भी है। "फूदीबाई रो फड़को लो,' हीराबाई रो हार लो, तागा री तलवार लो" इस प्रकार गाती हुई बालिकाएँ नाच खेल करती हैं। कहानी, कार वृद्ध बानर जी को पूछने पर इस खेल का भी इस कहानी से ही सम्बन्ध बतलाया था। जिसका तात्पर्य यह है कि सती भटियानी हीरांबाई के सौभाग्य

(मारवाड़ी) और राजस्थानियों को हिन्दी का स्वत अभ्यास होजाता है। मारवाड़ी भाषा तथा फारसी अरबी भाषा के शब्दों के अर्थ प्रत्येक पृष्ट के फुटनोट में दिया जाना चाहिये था। पर कुछ असुविधाओं के कारण वैसा नहीं होसका। अत मारवाड़ी शब्दों का पृष्टाक सहित कोश ग्रन्थ क अन्त में दिया गया है।

पुस्तक हाथरस म छपने के कारण कुछ अशुद्धिया भी रह गई हैं जिनका शुद्धि पत्र भी दे दिया गया है।

ग्रन्थ को रोचक बनाने एव कहानी कारों की परिपाटी को कायम रखने के लिए कहानीकारों के मु ह से सुने हुए पद्यों के अतिरिक्त पद्य और गीत लेखक ने स्वय बना कर अथवा सग्रह कर दिये हैं। पृ० १२ की लोरो, पृ० २२ की ब्रह्म महिमा और पृ० ६६ का देशमहिमा गायन लेखक के स्वय रचित हैं पृ० ४६ का प्रथम-मिलन के अवसर का सौभाग्य और उनके सूचक अलङ्कारों का महत्वपूर्ण भावप्रदर्शक लोकगीत श्रीसाकरियाजी की धर्म पत्नी ने लिखवाया है और हिन्दू मुसलमानों की एकता सूचक सुन्दर गीत को लेखक ने गुजराती गीत का हिन्दी अनुवाद दिया है। ये सभी गायन अत्यन्त मोहक राग-रागिनियों के और भावपूर्ण है।

आज भारत स्वतन्त्र हो चुका है। राजाओं की वह शान-बान अब नहीं रही। इस ग्रंथ में प्राचीन समय की शान के अनेक चित्र यथास्थान मिलेंगे, जो इतिहास की अतीत घटनाओं के रूप में विशेष उल्लेखनीय है। इसमें कोई शक नहीं कि इसी शान-बान के साथ लेखक अथवा कहानीकार ने महाराजा गजसिंह को एक बहुत ऊ चे दर्जे का प्रामाणिक शासक सिद्ध किया है जिनके कि साहस से बोगा और भटियानी जैसे देवरत्न प्रकाश में आ पाये हैं।

ग्रथ की कथावस्तु बहुत रोमाचकारी और आकर्षक है। आदर्शमाता पुत्रवधू, पुत्र, पिता और राजा का वर्णन बहुत ही सुन्दर हुआ है। नारी जाति जो आज बहुत हीन दृष्टि से अबला और बुद्धिहीन मानी जाती है

इन कथानकों से प्रेरणा प्राप्त कर अपने रूप को समझें। स्त्रोचित सम्मानम वीरता, कर्तव्यपरायणता धर्मप्रेम पतिभक्ति, देशभक्ति स्वाम कुल और वंश की गौरव वृद्धि के लिए पुरुष वर्ग को कर्तव्यमार्ग में आगे बढ़ने की प्रेरणा देना और कर्तव्य पथ पर अपने प्राणों को हँसते हँसते न्योछावर कर देना ये सभी एक आदर्श वीर सती की के रूप में बहुत ही प्रशंसनीय है। ढोला जी की पत्नी मरवणजी में ये सभी सद्गुण मूर्तिमान हो उठे हैं

राजस्थान की नारियों का व्यक्तित्व अपना निराला है जिस प्रकार जौहर और पति सहगमन की सती प्रथा के उदाहरण राजस्थान के समान अन्यत्र नहीं मिल सकेंगे उसी प्रकार हिन्दी और राजस्थानी भाषा की कवयित्रियों की संख्या भी राजस्थान के जितनी अन्यत्र नहीं मिल सकेगी सतियों और देवियों के रूप में उनकी पूजा भी राजस्थान में खूब प्रचलित है। अनेकों प्रेम कथाओं में भी उनके आदर्श और उत्कट प्रेम की कहानियाँ जिस रूप में पाई जाती हैं अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी वीरता, पति और पुत्रों को युद्ध में प्रवृत्त होकर अद्भुत वीरता से लड़ते हुये मर मिट जाने की अनोखी प्रेरणा और उनके पीछे बलिदान हो जाने की भावना राजस्थान की नारियों की बहुत ही उदात्त है। पर बहुत ही खेद की बात है कि राजस्थानी वीरांगनाओं की जीवन गाथाएं अभी उस रूप में प्रकाश में नहीं आ सकी है। थोड़ी सी वीरांगनाएं और कवयित्रिएं ही प्रसिद्धि प्राप्त है।

अन्त में यह आशा करते हुये कि ढोलाजी और मरवणजी की जैसी राजस्थान की विभूतियों शीघ्र ही अधिकाधिक प्रकाश में आने की प्रेरणा इस ग्रन्थ से मिले और राजस्थान का वास्तविक गौरव विश्व-विश्रुत बने। इन शब्दों के साथ प्रस्तावना समाप्त की जाती है।

बीकानेर   अगरचन्द नाहटा

१४।२।२६

अनोखी आन

प्राक्कथन

काछ-द्रढा कर-बरसणा, मन-चङ्गा मुख-मिट्ठ ।
रण-सूरा जग-वल्लभा, सो हौं विरला दिट्ठ ।।

(कवि ऊमर)

भावार्थ—जो लङ्गोट का दृढ़ अर्थात् विषय-विरक्ति में भीष्म-पितामह के समान दृढ़ है, असहाय जनों के लिये अपना सर्वस्व दान कर देने वाले हरिश्चन्द्र जैसा दानी है, प्रह्लाद के समान भीतर और बाहर एक समान पवित्र और विशाल हृदय वाला है, युधिष्ठिर और श्रीराम के समान हास्ययुक्त मुख द्वारा सदा मृदु और मनोहर सत्य-वचनामृत ही की वर्षा करने वाला अनुपम मिष्ट-भाषी है, कायर और स्त्रैण के समान प्राणों का मोह नहीं करके रण में जूझने वाला अद्भुत शूरवीर है और दिलीप के समान विशुद्ध परोपकारवृत्ति द्वारा जो संसार का प्रिय है। ऐसे सभी सद्गुणों वाले पुरुष संसार में विरले ही देखने को मिलते है ।

इस कथानक से प्रेरणा प्राप्त कर अपने रूप को समझें। इन्होंने सत्याग्रह वीरता कर्त्तव्यपरायणता, धर्मप्रेम पतिभक्ति देशभक्ति, त्याग कुल और वंश की गौरव वृद्धि के लिए पुरुष वर्ग को कर्त्तव्यपथ में आगे बढ़ने की प्रेरणा देना और कर्त्तव्य पथ पर अपने प्राणों का हँसते हँसते न्योछावर कर देना ये सभी एक आदर्श और सती स्त्री के रूप में बहुत ही प्रशंसनीय है। लोगाँ जी की पत्नी भटियाणीजी में ये सभी सद्गुण मूर्तिमान हो उठे हैं

राजस्थान की नारियों का वैशिष्ट्य अपना निराला है जिस प्रकार जौहर और पति सहगमन की सती प्रथा के उदाहरण राजस्थान के समान अन्यत्र नहीं मिल सकेंगे उसी प्रकार हिन्दी और राजस्थानी भाषा की कवयित्रियों की संख्या भी राजस्थान के जितनी अन्यत्र नहीं मिल सकेंगी सतियों और देवियों के रूप में उनकी पूजा भी राजस्थान में खूब प्रचलित है। अनेकों प्रेम कथाओं में भी उनके आदर्श और अनन्य प्रेम की कहानियाँ जिस रूप में कही पाई जाती हैं अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी वीरता, पति और पुत्रों को युद्ध में प्रवृत्त होकर अद्भुत वीरता से लड़ते हुये मर मिट जाने की अनोखी प्रेरणा और उनके पीछे बलिदान हो जाने की भावना राजस्थान की नारियों की बहुत ही महान है। पर बहुत ही खेद की बात है कि राजस्थानी वीरांगनाओं की जीवन गाथाएं अभी उस रूप में प्रकाश में नहीं आ सकी है। थोड़ी सी वीरांगनाएं और कवयित्रिएं ही प्रसिद्धि प्राप्त है।

अन्त में यह आशा करते हुए कि लोगाँजी और भटियाणी जी जैसी राजस्थान की विभूतियाँ शीघ्र ही अधिकाधिक प्रकाश में आने की प्रेरणा इस ग्रन्थ से मिले और राजस्थान का वास्तविक गौरव विश्व-विश्रुत बने। इन शब्दों के साथ वक्तव्य समाप्त की जाती है।

बीकानेर
१५।२।२६

अगरचन्द नाहटा

अनोखी आन

प्राक्कथन

काछ-द्रढा कर-बरसणा, मन-चङ्गा मुख-मिट्ठ ।
रण-सूरा जग-वल्लभा, सो हौं विरला दिट्ठ ॥

(कवि ऊमर)

भावार्थ—जो लङ्गोट का दृढ़ अर्थात् विषय-विरक्ति में भीष्म-पितामह के समान दृढ़ है, असहाय जनों के लिये अपना सर्वस्व दान कर देने वाले हरिश्चन्द्र जैसा दानी है, प्रह्लाद के समान भीतर और बाहर एक समान पवित्र और विशाल हृदय वाला है, युधिष्ठिर और श्रीराम के समान हास्य युक्त मुख द्वारा सदा मृदु और मनोहर सत्य-वचनामृत ही की वर्षा करने वाला अनुपम मिष्ट-भाषी है, कायर और स्त्रैण के समान प्राणों का मोह नहीं करके रण में जूझने वाला अद्भुत शूरवीर है और दिलीप के समान विशुद्ध परोपकारवृत्ति द्वारा जो संसार का प्रिय है। ऐसे सभी सद्गुणों वाले पुरुष संसार में विरले ही देखने को मिलते हैं ।

कथित उक्ति के समान समस्त सद्गुण किसी एक ही पुरुष में आज के समय मिल जाना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। प्राचीन समय में जबकि युरोप अमेरिका आदि देश असभ्य अवस्था में पशुवत् जीवन यापन कर रहे थे। मानवता का समावेश उनमें नहीं होने पाया था-आध्यात्मिक और भौतिक आदि विषयों का ज्ञान तो बहुत दूर की बात थी। तात्पर्य कि किसी भी प्रकार की उन्नति की ओर प्रवृत्त होकर सभ्यता के समीप नहीं पहुँच सके थे। उस समय भारतवर्ष के अतिरिक्त कोई ऐसा देश न था जो लौकिक और पारलौकिक ज्ञान द्वारा मानवता के अमूल्य मन्त्र समस्त संसार के श्रवण-रन्ध्रों में फूंक कर उसे अपने समान वास्तविक मानव बनाने का प्रयत्न कर रहा हो। अपने महान्-त्याग, परोपकार-वृत्ति, अलौकिक-बुद्धिमत्ता और सर्वोच्च गवेषणाओं द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक ज्ञान के कल्याणकारी तत्त्वों के अमूल्य दान द्वारा जगत् के हृदय-पीठ पर सब प्रथम भारतवर्ष ही सुशोभित हुआ था।

विनाश के साधनों की ओर प्रवृत्त करने वाले भौतिकवाद में उसकी श्रद्धा न कभी रही है और न सिद्धान्त रूप से आज भी है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' 'सर्वं खल्विदम् ब्रह्म' जैसे कल्याणकारी सर्वमान्य सिद्धान्तों का अनुगामी वह प्रागितिहास में था, आज भी वह उन्हीं का अनुगामी है। उसमें तोड़ फोड़ करने का साहस आज तक किसी में उत्पन्न नहीं हुआ, अपितु सबको अपने धर्मशास्त्रिक सैद्धान्तिक हठों को त्याग कर परीक्षण और अनुभवों द्वारा यह मानना पड़ेगा कि इहलोक और परलोक में शान्ति पाने का साधन भारतवर्ष का यह आध्यात्मिक ज्ञान ही है, जिसको यथावत् समझने के लिये संसार आज प्रयत्नशील होरहा है। भ्रमात्मक और धर्मशास्त्रिक सिद्धान्तों का अनुयायी होने के कारण संसार अनेकों बार उथल-पुथल हुआ, किन्तु भारत आज भी वही

भारत है। आज शासित होने की दशा में भी संसार के सन्मुख वह इस प्रकार के दैवी गुणों वाले आदर्श उपस्थित कर रहाहै कि जिनका समकक्ष अन्यत्र मिल नहीं सकता। इसीलिये उसका सुयश अबतक उसी प्रकार गाया जारहा है।

अनन्त उदाहरणों द्वारा हमारा इतिहास बता रहा है कि आध्यात्मिक प्रभाव द्वारा मौलिक व अनाद्यन्त–सिद्ध–अधिकार (Possession of the beginning point on the Eternal-Power) होने के कारण परोपकार और सद्‌गुण तो हमारे साधारण स्वभाव थे। पुरुषों की तो बात ही रहने दीजिये–नन्हे-नन्हे बालक और सुकुमारियों ने वे धर्माचरण (जौहर) दिखलाये, जिनकी उपमा पृथ्वी–पट पर मिल नहीं सकी। भौतिक–चकाचौंध की उन्मत्तता से निष्प्रभ बीसवीं सदी का ह्रासमय अंत भी आज भारत में लोकमान्य तिलक, महामना–मालवी और महात्मा गांधी जैसी विश्व की सर्वोत्कृष्ट प्रकाशमान विभूतियों के रूप में दर्शन करा रहा है। जिनकी उपमा में संसार के रैकोर्ड का उत्तर निल (Nil) है।

पराधीनता की सङ्कलों में बँधकर भारत ने सब कुछ खो दिया। दीन और दुखी होगया। किन्तु वंश परम्परागत अटूट संस्कारों के कारण उसकी परोपकार और सद्‌गुण–सम्पत्ति का अखूट भण्डार आज भी उसके पास ज्यों का त्यों संचित है।

अतीत के उस युग में जब कि भारत इस्लामी सभ्यता के ग्रीष्म–कालीन–मध्याह्न की असह्य कड़ी धूप में तड़फड़ा रहा था, उसके जन, धन, धर्म और मान-मर्यादा का मज़हब के नाम पर नृशंसता के साथ अपहरण किया जारहा था। उसकी शक्ति समूहों की माला के मनके

इधर उधर बिखेर दिये गए थे। इस महा-मनोज्ञ सभ्यता में भी उसने
सब पक्ष उसको करने में कोई कसर नहीं रखी। भयानक अमुरता भी
भिखारी उसके सम्मुख लजाती थी। किन्तु उस और इस में भेद इतना
ही है कि वह भौतिकवाद के मार्ग के से निराले प्रकाश से ऐसा चंगा नहीं
बनाया जा सका था जिससे कि उसका व्यक्तित्व सर्वांश में ही दूसरों के
हाथों में बिक गया हो। देश और धर्म के लिये अपने प्राणों का विसर्जन
करना एक साधारण सी बात थी। न चोरी करे, हीरा वाले कमाई
इस प्रकार के धर्माभिमान पर हँसते-हँसते मरने वाले अनेकों नर-
दम्पति घर-घर में प्रकाशित होते थे-जिन्होंने भारत की मलिन होने की
ओर जाती हुई आर्य-संस्कृति का अपने पवित्र रक्त की रज से मार्जन
करके उसे वैसा ही प्रकाशमान बनाये रखा।। अस्तु-

भारत की वीर-प्रसूता मरु-भूमि ने असंख्य ऐसे असाधारण नर
रत्नों को उत्पन्न करके अपनी कोख को उज्ज्वल कर दिया, जिनकी
समानता संसार के इतिहास में पाई ही नहीं जाती। डेनियल, सिकन्दर
जूलियस-सीज़र और नेपोलियन-बोनापार्ट आदि और युरोपियन जाति
के लिये उसके आदर्श-वीर समझे जा सकते हैं किन्तु भारत उनकी
वीरता पर आश्चर्य और गुणगान इसलिये नहीं कर सकता क्योंकि उसके
निज के कोष में ऐसे-ऐसे नर-रत्न और उन नर-रत्नों का इतिहास भरा
पड़ा है जो कि विदेशीय-कोष की तुलना में किसी भी भाँति कम नहीं है,
अपितु, वीरता, स्वामिभक्ति, देशभक्ति, धर्मभक्ति, सत्यता और
कर्तव्यपरायणता आदि में कई गुना बढ़कर प्रमाणित हुआ है। परन्तु दुःख
कि आज हम अंग्रेजी पढ़-लिखकर विदेशी-वीरों की गाथाएं अत्यातुरता से
पढ़ते हैं और अपने इन आदर्शों को भूलकर उनकी वीरता और व्यक्तित्व
पर लट्टू हो जाते हैं। अपने देश और जाति की गौरव-गरिमा को

दिग्दिगंत में प्रसारित करने वाले दैव-तुल्य वीरों की गाथाओं को उपेक्षा से देखते है । सच है, जब कि हम स्वयं अपने देश के वीर और क्रान्त-निर्माताओं की इस प्रकार अवहेलना करते है—तो दूसरे करें तो आश्चर्य ही क्या ? किन्तु यह निश्चय है कि हमारी ' संस्कृति और सभ्यता ' — हमारी 'भाषा' और उससे बढ़कर हमारे उन 'वीर और वीराङ्गनाओं की पवित्र गाथाओं पर अवलम्बित है कि जिन्होंने अपने पवित्र रक्त से हमारी जन्मदात्री मरुभूमि को सींच-सींच करके हमारे उच्च आदर्शों का निर्माण करके उनकी रक्षा की है। मारवाड़ी बन्धुओ ! याद रखिये !! यदि हमने इन दोनों—मातृ-भाषा मारवाड़ी और मरु-भूमि के धर्मवीरों के इतिहास को भुला दिया तो हम भी दीन और दुनिया इन दोनों से सदा के लिये गये । इन दोनों की अपेक्षा से हमारी किस प्रकार क्षति हुई और होती जा रही है—हमने कभी उस पर विचार ही नहीं किया । इन दोनों की उपेक्षा से मारवाड़ी जाति आज सुशिक्षा, सुसङ्गठन, संस्कृति-रक्षा और कर्तव्य परायणता आदि के अज्ञान रूपी अज्ञान की दीपक ज्वाला में पतङ्ग की भांति जलकर अपना अस्तित्त्व खोने जारही है ।

पाठक वर ! विदेशी वीरों के गुणगान की ओर से थोड़े समय के लिये अपना ध्यान हटाकर—

कट्टारी अमरेस री, तोगारी तरवार ।
हाथल रायांसिंघरी, दिल्ली रै दरबार ॥

में से ' तोगा री तरवार ' को ' अनोखी आन ' के नामान्तर में वीर वर तोगा राठौर और उसकी सद्य विवाहिता-पत्नी वीराङ्गना भटियानी की हिन्दुओं की सर्वोच्चता के प्रमाण परिचय में दिखाई गई उनकी अमूत-पूर्व वीरता और आदर्श कर्तव्य-परायणता की इस ऐतिहासिक नवल

कथा के सजीव-चित्र की ओर थोड़ा सा ध्यान देंगे तो आशा है उनको गौरवान्वित मिलने की शान आपके अन्तःकरण पर अङ्कित हुए बिना नहीं रहेगी।

हिन्दू जाति की विविध नसों में अपने पूर्वजों के पुनीत रक्त का पुनः सञ्चार करा देने वाला मारवाड़ के इस वीर सम्पत्ति का मारवाड़ी सभ्यताओं में अपूर्व चरित्र पाठकों की सेवा में निवेदित कर आशा की जाती है कि पाठक अपनी इस सम्पत्ति पर गर्व करेंगे और तदनुसार आचरण कर सच्चे मारवाड़ी बनेंगे।

ग्रन्थागाराध्यक्ष
श्री अभय जैन ग्रन्थालय
बीकानेर
दीपावली, वि सं २ १

बदरीप्रसाद साकरिया

अनोखी आन

प्रथम परिच्छेद ।

कट्टारी अमरेस री, तोगा री तरवार ।
हाथल रायासिंघरी, दिल्ली रै दरबार ॥

[भावार्थ—नागोर के अधीश वीर-श्रेष्ठ राव अमरसिंह राठौर ने मुगलिया सल्तनत को धुजा देने वाली अपनी कटारी का, अप्रतिम-वीर कुमार तोगा राठौर के कबन्ध ने यवन-सेना-विजयिनी अपनी तलवार का और ध्रागधरा के अधीश राजा रायसिंह झाला ने अपनी गज-गर्व-भंजन हथेली के बल का बादशाही दरबारों में (इन तीनों ही ने) अपूर्व परिचय दिया]

वि० सम्वत् १६८६ के आसपास की बात है । आगरे के क़िले में बादशाह शाहजहां का आज एक विशेष दरबार भरा हुआ है । सत्तर खान और बहत्तर उमराव उपस्थित हैं । उनकी ओर से बारी बारी से नजरें निछरावलें हो रही हैं । पंडित और कवि समाज बादशाह की प्रशंसा में अपनी काव्य कला सुना कर मन-वाञ्छित पुरस्कार पा रहे हैं । वीरांगनाएं अपने अद्भुत हाव-भावों द्वारा नृत्य और गान करके सभा को मोहित कर रही हैं । इसप्रकार शाही दरबार के नियमानुसार यथा-क्रम कृत्य होचुकने के पश्चात् शाहजहां ने सभा के सामने एक आश्चर्यजनक प्रश्न रखा । उसने कहा– आज का दरबार पूरा भरा हुआ है । हमारे दिल में एक सवाल कई दिनों से घर कर रहा था, आज पंडित, कवि और खान

लड़ने-झगड़ने का इस समय सबको अनुभव हो रहा था। सबके हृदयों में चिन्ता का साम्राज्य हो रहा था और कोई उपाय नहीं दीखने से मन ही मन लज्जित हो रहे थे। परंतु विपत्ति की कोई सीमा अवश्य होती है। खान उमरावों की ऐसी दयनीय-दशा को देख कर दक्षिण सूबे का सूबादार मीर खानजहां हाथ बांध कर खड़ा हुआ और उत्तर देने की आज्ञा के लिये याचना की। स्वीकृति मिलनेपर मीर कहने लगा कि—खुदावन्द! कमतरीन ने अपने बुज़ुर्गों की ज़बानी सुना है और कितने ही चश्म-द्-दीद वाक़आत पर ग़ौर करने से इस मज़मून पर यक़ीन करना पड़ा है कि हिन्दू लोग हमारे से दो बातों में आली-मरतबा हैं, इसलिये उनके इन रुतबों की दो तादाद ज़्यादा रखी गई हैं और वे ये हैं—

"(१) हिन्दू लोग लड़ाईयों में धड़ से सिर जुदा होजाने पर भी लड़ते रहते हैं और

(२) धड़ के गिर जाने पर उनकी पाक-दामन बीबियां उनके सिरों को गोद में लेकर उनके धड़ के साथ जल कर सती हो जाती हैं। ये दोनों बातें हम मुसलमान तो क्या, पर दुनिया की कोई ताक़त व क़ौम करके दिखा नहीं सकी। इसलिये शाही-मजलिस में इन की दो तादाद ज़्यादा रक्खी गई हैं।"

मुसलमानी राज्य में हिन्दुओं के ये दो विशेष स्थान बादशाह के हृदय में कांटे की भांति चुभ रहे थे। आज उनको हटादेने के लिये ही यह प्रश्न राज सभा के सम्मुख रक्खा गया था। किसीकी ओर से संतोषजनक उत्तर नहीं मिलने के कारण उसके हृदय में बड़ी प्रसन्नता हो रही थी और इस प्रकार सङ्कल्प-विकल्प उठा रहा था कि आज यदि

"शाही हुक्म टल नहीं सकता। अजाम मुद्दत की तर्फ राह देख रहा है"
बिचारे मीर के प्राण उड़ने लगे। वह हाथ बांधे कुछ और कहना चाहता
था कि बादशाह ने दरबार बरखास्त करने का हुक्म देदिया।

खान और उमराव उठ उठ कर अपने अपने स्थानों को जाने लगे
विचारा मीर भी बाज की झपट में आये हुये पक्षी के समान लड़खड़ाता
हुआ वहां से रवाना होने लगा। उस समय उसकी जो दशा हो रही थी
उसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी। उसको व्यथा को वही जानता
था। न्यायसिंहासन के सन्मुख वास्तविक तथ्य को प्रकाश में लाने के
कारण विचारे उत्तरदाता को ही, जो कि एक उससे भिन्न जाति विशेष
की प्रकृति व जन्म-सिद्ध अधिकार की बात होने के कारण उसके करने का
वह अधिकारी ही नहीं , उसीके ऊपर उसे कर दिखाने का उत्तरदायित्त्व
थोप कर उसकी असफलता पर उसके प्राण ले लिये जाने की अत्याचार-
पूर्ण बात को सुनकर समस्त सभा दुखी थी। उमराव लोग तो अत्यन्त
चिन्ता-मग्न थे। वे यह सोचकर लज्जित होरहे थे कि उनका उत्तर वे नहीं
दे सके इसलिये उनकी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिये एक व्यक्ति को वह
उत्तर देना पड़ा जिसके शब्दों में भरे कार्य को करने का अधिकारी वह
नहीं था, जिसके कारण वह मौत का अधिकारी समझा गया। न्याय का
आग्रह तो यही था कि प्रश्न का वास्तविक उत्तर मिल जाय। उत्तर के
शब्दों में भरी सत्य घटनायें हिन्दुओं की कोई नई बात नहीं थी, यह तो
उनके बपौती की और प्रतिदिन के साधनों की ऐसी प्रसिद्ध और
साधारण बात थी कि जो उस समय के वातावरण के अनुसार जब कभी
भी देखी जा सकती थी। किन्तु यहां तो बात दूसरी थी। धर्मान्धता-
पूर्ण घोर अत्याचार ही जहां मनुष्यता की परिभाषा मानी जाती है वहां

इस प्रकार सबके हृदयों में जोश की एक नवीन धारा का आवेश होता देख कर महाराजा गजसिंह और मीर बड़े प्रसन्न हुये। महाराजा साहब, मीर और सभी उमरावों को साथ में लेकर जोधपुर की हवेली में आ गये। सबको यथास्थान सन्मान देकर महाराज कहने लगे—

"आज रा दरवार में बादसा री चलाकी ने आप समझ ही ली है। ओ वो कालजे-बिना रो मिनख है जिण अपणा तुछ सुआरथा रै खातर उणारा कई काका, भाई नै दूजा कुटबिया री भूंडी दसा कर मार नांखिया। आ कोई छांनीछिपी बात नहीं है। कयो है के—

सबल सगाई नह गिणै, नह सबला में सीर।

खुरम अढारै मारिया, के काका के वीर॥

दूजै री चढ़ती नै दूजै रो सुख इणारा हीया में कांटा ज्यूं खटकिया करै है। इणवास्तै उणारी मसा है कै आंपणों इधको आंक किणी तरा उड़ाय देवणों नै आपांनै मुसलमाना रै बराबर कर देवणा।नै आ बात कदै ही जो परी हुई तो पछै वो आ बात करसी के मुसलमानी राज में हिन्दू और मुसलमान बराबर क्यूं। हिन्दुआं री आक कमत्ती रहवणों चाहीजै इण तरा एक बार दवियोड़ा नै दबावण री कोसिस करेला, जिणरो इसारो भी आज इण कर लियो है। सो म्हारो तो ख्याल है के मर-मिटणों चोखो पिण आ अजोगती बात नहीं ज होवण देवणी चाहीजै। साची हगीगत कहवण रै कारण जिण मीर साहब नै मौत रो ने'तो आयो है नै आंपै रजमों राखता थका उणनै करने नहीं दिखावां तो आपणी संसार-छावी रजपूती ऊपर पाणी फिर जावैला। संसार में आंपणीं मूंछ ऊंची-री-ऊंची राखणी है तो इण हगीगत नै आज फेर साची कर मीर रा प्राण

महाराजा गजसिंह सब का आभार मानते हुये कहने लगे—

"आप सगलां री ओ बडापणों है कै आप म्हांनै आ इज्जत बगस रया हो। एक दूजा री मदत ही ज एक नै म्होटो बणाय देवे है। सो ओ सारो प्रताप आपरो ही ज है।"

इस प्रकार अनेक भाति के परामर्श व विचार-विनिमय हो चुकने के दो चार दिन बाद महाराज गजसिंह के प्रस्तावानुसार सभी रजवाड़ों के राजाओं का आदेश प्राप्त कर वहा के प्रमुख प्रमुख जागीरदारों को साथ में लेकर दल-बल सहित मीर साहब ने रजवाड़ों में भ्रमण करने के लिए प्रस्थान कर दिया।

द्वितीय परिच्छेद।

किसी भी काम को करने या कराने में किसी मुख्य कारण का होना आवश्यक है। जिसके सामने जैसा कारण उपस्थित होता है वैसा ही उसका काम और उस काम का परिणाम होता है। जब दानवी संस्कृति और धर्म का प्रयोजक भारतवर्ष की महान आर्य-संस्कृति और धर्म के प्रति सद्भावना रखकर इस देश धर्म और जाति की आन और प्रतिष्ठा रखते हुए संसार के सम्मुख उसकी उज्ज्वल सभ्यता की धाक एवं छाप बनी रहने के लिए दैवी-सम्पत्ति युक्त सम्पत्ति का बलिदान किये जाने की आवश्यकता में जिज्ञासु रूप में खोज करने को निकले और यत्र-तत्र भ्रमण कर उन्हें प्राप्त करना चाहे यह बड़ा कठिन काम है। प्रायः धर्म प्रयोजक के सामने तो उसका कारण अवश्य उपस्थित है किन्तु जिनके द्वारा कार्य कराना है उनके सम्मुख तो कोई कारण नहीं है। बिना कारण पराये सुख के साथ आपदाओं में हाथ नहीं। ऐसे अनुपम साहसिक कार्य के लिये तत्पर होने को देश धर्म और जाति के विरुद्ध कोई बाहर भेद-भाव व वाद-विवाद के द्वारा रक्त में उबाल आने का जब तक कोई कारण नहीं उत्पन्न किया जाता, तब तक यथाशक्ति ऐसे महान कार्य के करने वालों का प्राप्त होना दुर्लभ है।

महाराणा राजसिंह का मीर साहब के प्रसंग का प्रस्ताव एक मनमोहक मात्र था, जिससे भिन्न-भिन्न राजाओं के सरदारों के सम्पर्कमें रहने से उनकी मानसिक वेदना कम हो जाय और इसी मिस मुगल सम्राट की चर्चा समस्त राजस्थान के घर-घर में पहुँच कर क्षत्रियों में उत्तेजना उत्पन्न कर दे।

किन्तु इस भ्रमण की ओट में बात कुछ और ही थी जो धीरे धीरे एक दूसरे की कानाफूसी से प्रकाश में आती जा रही थी।

उस दिन शाहजहां के दरबार में महाराजा गजसिंह की आक्रमपूर्ण गर्जन से ही आज इस बात की पुष्टि होती जा रही है कि शाहजहां के कुटिलतापूर्ण प्रश्नों के उत्तर रूप में इस महान यज्ञ की योजना का श्रीगणेश उसी दिन हो चुका था, और उसकी पूर्णाहुति का कार्य अधिक तत्परता और त्वरित गति से किन्तु अत्यधिक धैर्य और विविक्तता से जोधपुर के दुर्ग में सम्पादित हो रहा है।

यह तो सब कुछ निश्चित ही था। किन्तु उधर ज्यों ज्यों अवधि समीप आती जारही थी, विचारे मीर के पावों के नीचे से धरती खिसकती जा रही थी। अवधि के अंतिम दिन की स्मृति उसके साम्हने काल की भयानक मूर्ति खड़ी करके उसके रक्त का शोषण कर उसे सुखा रही थी। उसे क्या पता कि इस काम की चिन्ता उससे भी विशेष किसी और को भी है जो अन्न-जल की भी चिन्ता नहीं करके काल का आह्वान करने के लिये अहर्निश माला फेर रहा है और अवधि के अंतिम दिन के स्वागत की अभूतपूर्व तैयारी कर रहा है।

दोनों की ओर से एक ही उद्देश्य की सिद्धि के कार्य और कारण की विलगता होने के कारण एक दूसरे की चिन्ता में कितनी विषम असमानता। एक को उसके लिये काल-कवलित हो जाने की चिन्ता है तो दूसरे को उसी के लिये अभिमान पूर्वक उसकी गोद में शीघ्र सोकर सर्वोपरि परमानंद प्राप्त करने की। अस्तु—

मीर साहब को रजवाड़ों के सैकड़ों ठिकानों में फिरते २ बात ही बातमें पाच महीनों की अवधि समाप्त होगई। काम नहीं बनने की स्थिति

में उनके वे पाँच महीने उन्हें पाँच दिन बीतने के बराबर प्रतीत हुये । वे तो यह ही जानते थे कि उनकी वांछित वस्तु भी विज्ञापनी वस्तु की भाँति किसी चोरों की बजार में संचित है जो किसी अपनी वस्तुओं का प्रचार करनेवाले उदार दुकानदार की सेवा में याचना करने मात्र से बिना मूल्य चुकाये हाथ लग जायगी। किन्तु उनकी यह भूल ही उनके मनिस्थान का मुख्य कारण बन रही थी। वस्तु स्थिति के समझनेमें थोड़ा सा अन्तर होने के कारण उनकी विचारधारा का प्रवाह पलट गया जिससे वे अपने पर्यटन में असफल रहे। परन्तु जैसा कि उन्होंने समझा वे एक सीमित-परिमाण वाले बाजार में नहीं थे। उनका प्रवेश अनोखी-बान वाले राजस्थान जैसी वृहत् नग के भीतर था, जहां एक से एक बढ़ कर असंख्य वीर-वीरांगनायें मृत्यु की मालायें पहर गले का हार और एक विनोद की वस्तु समझती थीं। जहां नवजात शिशुओंको पलने में झुलाती हुई मातायें हीलोरी (लोरी) गाकर मरने और शत्रुओं को मारने के लिये सुन्दर और अनुपम संस्कार भरती थीं।

हीलोर——हीलोर————हीलार————हीलोरे ।
म्हारा नंद कँवर रे कंठ, चोखी रो हीलो रे ॥
थो सिंधु सांभयु जिनके पालणियो डगमग डिगजे ।
अमना पंख बनाई हिय थोर न मानै हीलो रे ॥ १ ॥
थो बेटो दया मजावै कंधनी ऊपर जमजे ।
जबर्द री बाजू झुमाई पावै जसपख पीतो रे ॥ २ ॥

इसलिए उनके अपने मौत से खेलने के अतिरिक्त दूसरा खेल ही नहीं जानते थे। जहाँ नित्य ही मृत्यु पर विजय का संकल्प हो रहा था।

दांतों के बीच जिह्वा की भांति मौत उनसे डरती थी, वे मौत से नहीं डरते थे। मृत्यु के साथ वरण की याचना करने पर जहां से निराश होकर आज तक कोई लौटा ही नहीं। ऐसे चिर-उदार दुर्दमनीय गढ़ में से इस पुण्य कार्य के लिये कोई बैरंग लौट जाय, यह हो ही कैसे सकता था! कारण स्पष्ट है। याचक तो था किन्तु याचना करना जानता नहीं था। गाहक था किन्तु साहस नहीं था। आवश्यकता थी किन्तु प्रकाशन-कला का अभाव था। मीर को दर-ब-दर भटकने की आवश्यकता ही नहीं थी। वह किसी एक ही स्थान से अपनी वांछित वस्तु पा सकता था। सैकड़ों ठिकानों में भ्रमण करके परस्परावलोकन के अतिरिक्त प्रस्तुत कार्य को किसी व्यक्ति विशेष के सम्मुख स्पष्ट करने का अवकाश ही कहां था! आतिथ्य ही पूरा नहीं होने पाता था कि कार्यक्रम के अनुसार वहां से प्रस्थान करने का समय हो जाता था। केवल आश्वासन के अतिरिक्त इस थोड़े समय के वार्तालाप में वे प्राप्त कर ही क्या सकते थे।

दिसि खोज भम्यो खट पंच-चूण,
जुड़ियो नह थापण-भ्रम्म जूण।

निदान सभी रजवाड़ों और ठिकानों में फिरते २ आश्वासन और सहानुभूति के अतिरिक्त जब कुछ हाथ नहीं आया तो निराश होकर मीर महाराज गजसिंह के पास लौट आये।

मीर का सूखा शरीर और उसकी विह्वलतापूर्ण दशा देख कर महाराजा साहब बहुत दुखी हुए। बात चीत द्वारा उन्हें अब यह पता पड़ा कि मीर के रजवाड़ों में भ्रमण करने को निकलने के समय किये गये संकेत को ("यूं करतां भी कांम नहीं बणतो दीसै तो आप जोधपुर उरा

पधारसो सो भगवान म्हारा चोक ठीक करसी ") यह नहीं समझ पाया था अथवा उसको शिष्टाचार मात्र ही की बात समझली गई थी। कुछ भी हो अब विशेष देर करना उचित नहीं समझ महाराजा साहब ने उसी समय दीवान को बुलाकर आज्ञा दी कि—"मीर साहब रा कौल मैं अखबार" री छपोड़ी छापी रै अनुसार मारवाड़ रा योग्य महीना सात ही सरदारां नै तुरत जोधपुर पौंहचण सारू मित री आज्ञा है वांस रा खास परवाना राज रा खास मुख सूं जाहिर कर देवण रो जरूरी परबंध कियो जावे नै इण वास्ते दूसरा जरूरी सूं जरूरी कामां नै ढीला छोड़ दिया जावे। महाराज की आज्ञानुसार दीवान ने परवाने लिखवा कर उसी दिन हलकारों के साथ चारों ओर भेजने की व्यवस्था कर दी। परवानों के मिलते ही रवाना होने की तैयारी कर दल-बल सहित दस दिन के भीतर २ मारवाड़ के समस्त सरदारगण जोधपुर पहुंच कर अपनी २ हवेलियों और निश्चित किये गये स्थानों में ठहर गये और दरबार भरने के दिन की उत्सुकता से राह देखने लगे। जोधपुर नगर में सरदारों का ऐसा ठाठ एवं सम्मेलन इससे पूर्व कभी देखने सुनने में नहीं आया था। और जहां देखो वहां छोटे बड़े सभी स्त्री-पुरुषों के मुखों पर शाहजादे के आगमन की चर्चा के अतिरिक्त कोई बात ही न थी।

इधर गढ़ के भीतर सिंहासनसभा दरबार, आमात्यवर्गों अन्य राज-कर्मचारियों और प्रजा इत्यादि के लिए यथोचित सिंहासन, मंच आदि स्थानों के सजावट की तैयारी-ऐसी अपूर्व और अनोखे ढंग से की गई थी कि जिसके देखने मात्र से उस आर्य-युग के पुनरागमन का भान होता था जिस में हमारे पूर्वजों ने संसार में सर्व प्रथम अपनी सर्वोपरि सभ्यता की आर्य-संस्कृति को भारतभूमि में जन्म दिया था।

प्राचीन युग में हमारा जीवन धर्मयुक्त था। हमारे सभी काम आर्ष-सिद्धान्तानुसार व्यवस्थित थे। इसलिये सर्वत्र सुख, शान्ति व धन-धान्य का बाहुल्य था। भारत के आर्यों ने समस्त जगत को अपनी लौकिक और पारलौकिक विद्याओं का दान देकर उसकी पाशविकता में मानवता का निर्माण किया एव स्वावलम्बन का पाठ पढ़ा कर सम्पन्न बनाया। जगत ने उसके वैभव, धर्माचरण और परोपकारिता पर मुग्ध होकर उसका नाम स्वर्ग रखा और उसके तैंतीस-कोटि निवासियों को देवी-देवता माना। भारत ने जैसा कहा, जगत ने वैसा किया और उसने जैसा किया उसको विनत होकर माना। किन्तु आज यह बात नहीं है। समय ने पलटा खाया। प्रबलतम उदित-सूर्य उत्तरोत्तर प्रखर प्रकाश को प्रसारित करता हुआ अपनी चर्म-सीमा के उग्रताप वाले मध्याह्न को प्राप्त होकर अपने ताप और प्रकाश को उत्तरोत्तर घटाता हुआ अस्त होने के लिये बाध्य होता है। पीयूष-वर्षक पूर्णमासी के पूर्ण चन्द्र को अमावस्या जैसी घोर अँधेरी रात्रि का कारण बनना पड़ता है। अनेक छोटी-मोटी नदियें पातक-हारिणी परम-पावन जाह्नवी से मिलकर अपना अस्तित्व खोती हैं किन्तु नदेश को वरण कर इठलाती हुई गंगा को भी अपना नामोन्मूलन करना पड़ता है। जो मुख-विवर एक समय हँसने के लिये विकसित होता है वही एक समय करुण-क्रन्दन के लिए विस्फारित होता है। विकसित पुष्पों को मुरझाना पड़ता है। कहा तक कहें, काल की गति के आगे अजन्मा ईश्वर को भी किसी एक रूप में अवतीर्ण होना पड़ता है। उसने स्वर्गोपम भारत के भाग्य को भी उलटना आरम्भ कर दिया। उसके अटल उदयास्त चक्र के अस्तावर्त्त-भाग की विनाश-कारी द्रुत गति द्वारा उत्पन्न विस्फुलिंगों ने झुलसाकर उसे अकर्मण्य और स्वाभिमान-रहित बना दिया। धर्म और शक्ति की उपासना

सोच कर वह सच्चा कर्तव्य निभानेवाली विश्वामित्र-देवी को अपना परिवार समझ तन-मन और धनसे उसकी सेवामें लग गया। 'एकोऽहम् बहुस्याम्' के सिद्धान्तानुसार देवी ने प्रसन्न होकर अन्नपूर्णा "ऐश्वर्य-देवी" के षोडश कलापूर्ण रूप में अवतीर्ण होकर साम्राज्य-विध्वंसक शासन की स्थापना कर दी। और अपने परोपकारी विद्वगणों को अनेक गुप्त शोषी-साम्राज्य-संस्थापकों के रूप में प्रगट कर परस्पर बैर स्पर्धा की सहायता से अपने वणिकजनों द्वारा भारत को गारत करने का अविरत उद्योग करना आरम्भ कर दिया। वणिकजनों का प्रमाण कभी निष्फल होता नहीं सुना गया। उसके ऐसे अपूर्व त्याग को देख उसके स्वदेशी अपने शिष्य उस पर मुग्ध हो गये। वे अपना कलेजा थाम नहीं सके। उपकारस्वरूप कर्तव्य को सोच कर बड़े कष्ट के साथ उन्होंने यहां पदार्पण किया और अपने स्वामी बने हुये हम भारतवासियों की अपार धन-सम्पत्ति और वस्तुओं को हमारे से अपने अधिकारमें लेकर हमारा शारीरिक भार हल्का करने लगे। एवम् अपनी भी जान बचाकर गुरु-दक्षिणा के बोझ भार से उबार होने लगे। अतिथि-सेवा के विधायक भारतवासियों ने स्वनिर्मित इस नियम का पालन करने में किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने दी। होने भी कैसे देते! घर की सम्पत्ति जो रही। महादानी महाराज हरिश्चन्द्र युधिष्ठिर और कर्ण जैसे उदार महापुरुषों के वंशज उनकी उज्ज्वल कीर्तिको भला कैसे डूबने देते! उन्होंने उन शिष्य-अतिथि जनों की वह सेवा की जो कभी सुनी भी नहीं गई होगी। मन अर्पण करके नवीनता को तन अर्पण करके दरिद्रता को और धन अर्पण करके अपनी बहू-बेटियों की प्रतिष्ठा को परिष्कृत कर दिया। एवं परिष्कृत कर दिया मानवता मिटाकर अपनी चिर-दासता को, देव-दुर्लभ जगद्गुरु भारत को उनके चरणों में अर्पण करके।

ओह ! कैसा हृदय-विदारक और अभूतपूर्व परिवर्तन !!
:षियों की पावन-भूमि का यह घोर पतन ! श्रीकृष्ण की कर्म-भूमि में
से कुत्सित काण्ड ! मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम द्वारा स्थापित आदर्श
र्यादा का यह उन्मूलन !

ओ कलङ्किनी ! वैश्वर्य देवी ! तेरी कृपा ने उसका क्या नहीं कर
;या ! विश्व के ऐतिहासिक-साहित्य की प्रत्येक पंक्ति बतलाती है कि
उसने स्वर्गोपम भारत की जियारत करके उसे गारत कर दिया !"

परतु भगवान् की माया विचित्र है। इतना पतित होने पर भी
सने अपनी लीला भूमि का मोह नहीं छोड़ा । इसलिये उसकी ऐसी
वस्था में भी यहा ऐसे आदर्श बनते रहे, जो संसार में कभी बने
। नहीं ।

जिस अवस्था की ओर अब हम संकेत करना चाहते हैं, वह इस
धोगति की काल रात्री के द्वितीय प्रहर की प्रथम घड़ी थी। पारस्परिक
म कलह रूपी दारुण हिम-पात से भी उसकी संस्कृति का बीज सर्वथा
ष्ट नहीं हो सका था। अवसर पाकर स्थान-विशेषों में अंकुर निकल कर
ल्लवित होते थे और फल युक्त भी ।

तात्पर्य कि ऐसे कठिन समय में भी भारतीय संस्कृति और
वाभिमान का सर्वथा लोप नहीं हो सका था। अनेक अविवेकी और
ोलुप अपने धर्म और संस्कृति को तिलाञ्जलि देकर अनार्य बनने का
र्व करते थे, वहाँ ऐसे धर्मवीर महापुरुष भी थे जो धर्म के लिये जीने
ौर मरने को महान गर्व की वस्तु समझते थे। अस्तु ।

जोधपुर के महाराजा गजसिंह और उनकी ओर से भरा जाने वाला यह दरबार एवं उसके द्वारा निर्मित विमर्श एक ऐसी ही गौरवशालिनी आर्य-संस्कृति का निदर्शन है जो स्वर्णोपम भारत की सुर्वाजल को अभी प्रकृत रूप में हमारे सामने ला रखता है।

मारवाड़ के समस्त सरदारों का जोधपुर में आगमन हो जाने के बाद, विश्राम और आमोद-प्रमोद के लिए एक दिन का बीच देकर गढ़ के भीतर आयोजित दरबार भरा गया। समस्त सरदारगण सुन्दर और बहुमूल्य वस्त्राभूषण और शस्त्रों से सज्जित होकर अपनी अपनी मिसल के अनुसार दाईं और बाईं पंक्तियों में मनोहर मंचों पर और विद्वत् समाज दीवान, शासक और राज्य-कर्मचारीगण एवं प्रजा-प्रतिनिधि राज्य सिंहासन की पृष्ठभाग और सम्मुख भागमें क्रमानुसार सुन्दर और बहुमूल्य मुखासनों पर आसीन हुए महाराजा गजसिंह के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कुछ समय पश्चात् प्रासाद-प्रांगण में "जोधा-वंश रा उजागर ने खमा २ खमा। जोधाणनाथ नै खमा २ राम-गुसांईजी रा नाम नै खमा खमा" का घोष सुनकर मंडपस्थित समस्त राज-समाज खड़ा हो जाता है और अपने वस्त्र शस्त्रादि को सम्हाल कर विधिवत् कर लेता है।

"सूरज वंशावतंस राठौड़-कुलभूषण रणबंका राठौड़ जोधा वंश रा उजागर, नव-कोटि-मारवाड़ रा धणी, महा-मरुधरा पति, धर्म-सनातन आर्योचनाथ गौ ब्राह्मण प्रतिपालक वसुधा मण्डन प्रजा मन रंजन, कर्म समदर्शी राजराजेश्वर राजमुकुट मणि नरेन्द्र शिरोमणि महाराजाधिराज श्री श्री १ ८ श्री गजसिंह जी महाराज राजसभा में सुशोभित करण वास्ते पधारणा री पधारणगी सू अनुमत आदेश रया है। सकल सभा सावधान"

राजसभा के नियमानुकूल और सभासदों की सतर्कता के लिये चोबदार द्वारा महाराज के पद और अधिकारों की इस विभूतिमान राज-कीय विज्ञप्ति को सुनने के साथ महाराजा सीढियों से उतर कर राजसभा की ओर आते हुये दिखाई दिये। महाराजा के जामा के छोरों को उठाये हुये परम्परा से नियोजित-वंश के दो जामा-धरदार और उनके पीछे दो चँवर करने वाले तथा सब के पीछे केसरिया वेश-भूषित दो पंक्तियों में दश अगरक्षकों के साथ महाराजा सभा-मण्डप की ओर अग्रसर हो रहे हैं। खड़ा हुआ राज-समाज हाथ जोड़ कर पीठ और सिर झुका देता है और महाराजा के सभा-मण्डप में प्रवेश कर सिंहासन के समीप पहुंचते ही 'घणी खमा' का एक स्वर में जय-घोष कर पूर्वानुसार दंडवत सीधा खड़ा हो जाता है और महाराजा के सिंहासनासीन होने पर विधिवत यथास्थान आसीन हो जाता है।

भगवान भास्कर के उदयाचल से प्रस्थान करते समय की लालिमा के समान दीप्तिमान महाराजा गजसिंह स्वर्ण-निर्मित, रत्न जटित मयूर सिंहासन पर वामीबध-खिड़किया-पाग और श्वेत जामा पहिने हुये सुशोभित हो रहे हैं। केसरिया पाग में तुर्रे कलङ्गी, रत्न जड़ित सेली और किरीट आदि धारण किये हुये हैं। गले में हीरे, पन्ने और मोतियों के हार लटक रहे हैं। दोनों भुजाओं में दो भुजबंध और जामा पर दोनों ओर दो स्वर्ण-खचित तलवारें और कमर में दो बड़ी कटारें बँधी हुई हैं। उनके प्रलम्ब बाहु, कमलवत् अरुण नेत्र, कुटिल-भ्रकुटि, सिंह के समान प्रशस्त वक्षस्थल, अतुल ओज युक्त मुख-मण्डल का सौष्ठव और सूर्य-रश्मि के समान सीधे खड़े दाढ़ी के दुरंगे केश—ये सभी आज एक निराली ही शोभा दे रहे हैं। महाराजा के ललाट-पटल पर अक्षत-युत कुंकुम का तिलक आज की राज-सभा में एक नवीन और रहस्य-पूर्ण बात है।

अमल कचाला उभलै, होदा केसर रग ।
पीव जिका घर जावता, सीस न लीजे संग ॥ ७ ॥
ऊंग जिम दूणा अमल, लीजै आज अठेल ।
मर जाणा रा खेल मे, घर जाणा रो खेल ॥ ८ ॥
म्हालो अमल जिणवार, थाट रजपूता थडै ।
म्हालो अमल जिणवार, महा जुध भारत मंडै ॥
म्हालो अमल जिणवार, सोहै रंग-राग सहेल्या ।
म्हालो अमल जिणवार, माणवा नार महेला ॥
अमल ह्वालो जिण विरिया इधक, जुडै सैण मिजलस जटै ।
रूसणां क्रोध मेटण रिधू, वडै हरख आफू वटै ॥ ९ ॥
खत्री चारण खावका, माजम मौज मचंत ।
एल सुपारी घण अतर, अवरा वीच बटत ॥ १० ॥
हर कहणों हक बोलणों, कूडा नहीं कबल्ल ।
ज्यारा कदै न ऊतरै, आठू पहर अमल्ल ॥ ११ ॥

इस प्रकार अफीम की मनुहारों के साथ चारण लोग अफीम की महिमा का वर्णन करके अफीमची सरदारों को अधिक अफीम और कसूबा लेने की प्रेरणा कर रहे हैं। अपने हाथों में स्वर्ण-निर्मित हुक्के थामे हुये सेवक गण बारी-बारी से सरदारों को हुक्के पिला रहे हैं। कई सेवक गण स्वर्ण-थालों में भरे हुये मेवा-मिष्टान्नों के खारभंजणे बाट रहे हैं। कई सुगंधित अबीर-गुलाल उडा रहे हैं। कई रत्न जटित स्वर्ण के जलोत्क्षेपकों द्वारा भाति-भाति के इत्र आदि सुगंधित द्रवों का क्षेपण कर रहे हैं। कई अनेक प्रकार के नशीले पदार्थों से बनी माजूनें बांट रहे हैं और कई स्वर्णपत्र-मंडित पान और सुपारी इलायची आदि बाट रहे हैं।

श्रौर चढै गढ ऊपरा, नीसरणी बल़ नीठ।
श्रजको भड़ पूगै उठै, माकड़ मेलै पीठ॥
नर गिरवर वाकी नदी, त्यु वकड़ा तुराट।
धर वकी वका धणी, दका मुरधर वाट॥
विण माथै वाढै दला, पोढै करज उतार।
तिण सूरा रा नाम ले, भड़ बाधै तरवार॥

वीर-रस भरी कविता श्रौर कसू बा के तौर में सरदारों के चहरों पर एक नई चैतन्यता श्रौर खुश-मिजाजी देख महाराजा गजसिंह कहने लगे--

" सरदारां ! मीर खानजाखांन री हगीगत श्राप सगला री जाण में ही ज है। वे मारा रजवाड़ा में फिर-फिरायनै हमैं श्रठै श्राया है। मारवाड़ सगला रजवाड़ा में नर-समद कहीजै है। दूजा रजवाड़ां रै ज्यु जो श्रठासू भी मीर साव निराश होयनै पाछा परा गया तो श्रो नर-समंद नाम श्राजसू मिटियो समझीजसी नै इणारी ठोड़ कलंक रो टीको लागो समझियो जावैला। दुनिया सू एक दिन जरूर जाणो है। रजपूत नै माचा में पड़िया रहनै मरण रो म्होटो महणों है। जणणी रा चू घियोड़ा नहीं लजाय– एक रजपूत हुवण रो नै मर नै श्रमर हुवण रो श्रो श्रमोलो टाणों म्हारा रण-धका राठोड़ नहीं ज चूकैला। मारवाड़ रा रजपूता रो तो श्रो विड़द है कै दूजा रो उपगार करता-करता ही ज मर-मिटणों श्रौर जिण में श्रोसतो श्रापणै घर रो ही ज काम है। मो जिण सरदार नै श्रो भरोसो हुवै कै उणरो माथो पड़िया पछै उणरो धड़ लड़ैला नै धड़ पड़िया पछै उणरी ठकरांणी उणरै लारै सती हुय जावैला, वो सरदार श्रागै श्रायनै श्रो बीड़ो उठाय ले।"

थौर चढे गढ ऊपरा, नीसरणी वल नीठ।
अजको भड़ पूगे उठे, माकड मेलै पीठ॥
नर गिरवर वाकी नदी, ज्यु वकड़ा तुराट।
घर वकी वका धणी, वका मुरधर वाट॥
जिण माथे वाढे डला, पोढे करज उतार।
तिण सूरा रा नाम ले, भड़ वाधै तरवार॥

वीर-रस भरी कविता ओर कसूंबा के तौर में सरदारां के चहरों पर एक नई चैतन्यता ओर खुश-मिजाजी देख महाराजा गजसिंह कहने लगे--

" सरदारा ! मीर खानजाखान री हगीगत आप सगला री जाण में ही ज हे। वे म्हारा रजवाड़ा में फिर-फिरायनै हमै अठै आया है। मारवाड़ सगला रजवाडा में नर-समद कहीजै है। दूजा रजवाड़ां रै ज्यु जो अठासू भी मीर म्हाने निराश होयनै पाछा परा गया तो ओ नर-समंद नाम आजसू मिटियो समझीजसी नै इणारी ठोड़ कलक रो टीको लागो समझियो जावैला। दुनिया सू एक दिन जरूर जाणो है। रजपूत नै माचा में पड़िया रहनै मरण रो म्होटो महणों है। जणणी रा चू धियोड़ा नहीं लजाय-- एक रजपूत हुवण रो नै मर नै अमर हुवण रो ओ अमोलो टाणों म्हारा रण-वका राठोड़ नहीं ज चूकैला। मारवाड़ रा रजपूता रो तो ओ विड़द है कै दूजा रो उपगार करता-करता ही ज मर-मिटणों और जिण में ओसतो आपणो घर रो ही ज काम है। सो जिण सरदार नै ओ भरोसो हुवै कै उणारो माथो पड़िया पछै उणारो धड़ लड़ैला नै धड़ पड़िया पछै उणारी ठकराणी उणारै लारै सती हुय जावैला, वो सरदार आगै आयनै ओ बीड़ो उठाय ले।"

पिण इण नर-मसद्रा री सभा रै माजना मे तो धूड़ पड़ी ही ज समझीजैला।"

महाराजा के वक्तव्य के समाप्त होने के पूर्व ही एक लम्बी भुजाओं वाला लाल नेत्र किये हुये साधारण स्थिति का किशोर युवक अपनी तलवार को म्यान के बाहर निकाल कर ऊंची उठा रोष के साथ कहने लगा-

"अन्नदाता! धणी ऐड़ी नहीं फुरमावै। म्हारै बैठा धणिया नै बीड़ो उठाणो पड़ै तो म्हारी जिणियारी लाजै। आ इत्ती ही घणी हुई कै आपरो नहीं सुणवा जिसी सुणी। इण सेवग री धड़ माथो पड़िया पछै लड़ैला, पिण हूं कुंवारो हूं सो दूजोड़ी बात म्हारा सूं वण नहीं आवै। माथो उतरिया पछै जोवजे सूरवीर रै जिआ जुध खंडत नहीं हुओ तो पाच दिन ताई लड़तो रहवण रै सारू ओ बीड़ो उठाऊं हूं।"

इस प्रकार कहने के साथ इष्ट-स्मरण करते हुए लपक कर वीर कुमार ने अपने खड्ग से उस स्वर्ण-पत्र मय बीड़े को प्रणाम कर आदर के साथ उसे उठा लिया और महाराजा को झुक कर प्रणाम कर के उलटे पांवां अपने स्थान पर आकर खड़ा होगया। और कालाग्नि के समान रोष के साथ गर्जता हुआ कहने लगा-

भुजि तोल खड्ग मनि करण भाय,
रढ-राण तोग गरज्यो रिसाय।
सिलहेस ढहूं हठ गहू सार
ऊधड़ू कड़ी बगतर अपार।
साजोर लड़ू न खंडै संग्राम
रण गहण वहूं जिम लक राम।

नैं मिगलो परबंध राज रो हुवैला नैं किलैं सू महाराज कुवार रैं ज्यु थारी जान चढैला।"

महाराजा साहब ने दूसरा बीडा फिराने की आज्ञा की। पान-सन्दार जब बीड़ा फिराने लगा तब पुन महाराजा साहब कहने लगे—

"तोगा जी जड़े महान पराक्रमी वीर नैं अपणी कन्या परणावणी बड़े भागरी बात है। इणा जैड़ा जमाई मिलणों पूरब जनमें रा सुकरता रो फल है। सा जिणरा घर में ऊमर-लायक कुँवरी हुवै नै वा तोगाजी लारैं सती हुवै, ऐड़ी जिण सरदार नैं पूरी खातरी हुवै वो सरदार ओ बीड़ो उठावै।"

अब पहले की सी बात नहीं थी। कई खास कारणों से सरदारों का दबा हुआ शौर्य अब उनके मुखों पर चमकता हुआ दिखाई दे रहा था। उनके लाल-लाल नेत्रों से ऐसा जान पड़ता था कि मानों उनमें से अग्नि बरस रही है। महाराज का छोटे से छोटा उपालम्भ भी अब उनके कान सुनने को तैयार नहीं थे। उनके वक्तव्य की समाप्ति तक का धैर्य भी उनमें प्रतीत नहीं होता था। और हुआ भी ऐसा ही। एक प्रौढ भाटी सरदार ने वक्तव्य के बीच में ही खड़े हो अपनी तलवार उठाकर महाराजा का अभिवादन किया और बीड़े को उठाकर कहने लगा—

"अन्नदाता! म्हारी कुँवरी तोगाजी नै परणाऊंला नै वा तोगाजी लारैं सती हुवैला।"

महाराजा ने उत्तर में कहा—

"रंग है थानैं, नैं घणा रंग है भाटी सरदारां नैं। भाटियां सिवाय दूजो ओ काम कुण करै! भटियाणियां रो सती हुवण रो चीलो अनादी सू वहतो आयो है।

तृतीय परिच्छेद

इधर भाटी सरदार ने संध्या के समय घर आकर अपनी ठकुरानी को कुंवरी के पास में बैठे जोधपुर का उक्त सब वृत्तान्त कह सुनाया। फिर ठाकुर कुंवरी की ओर फिर कर कहने लगा—

"बेटा! थारै भरोसे मैं ओ बीड़ो उठायो है। म्हारी, म्हारै कुलरी, रजपूता री नै सगला हिंदुआ री लाज आज थारै हाथ है। इण कुल में उपनियोड़ी अनेक कुवरिया अपणो परम धरम समझ हँसती हँसती अगनी में कूद अपणे धणी रो साथ कियो नै कुल नै उजालियो, पिण इण जैड़ी पारख आज तांई नहीं हुई। म्हनै भरोसो है कै म्हारी डीकरी इण कठिण पारख सू पाछी नहीं पड़ैला, क्यू कै आ बात ठाली मरणै-जीणै री नहीं है, पिण एक अनोखी राम-घटना सू जुड़ियोड़ी है।"

लज्जा से सिर नीचा करके नखों से आंगन खरोंचती हुई कुवरी कहने लगी—

"जीसा! आप इण बात री भलो सोच कियो? हूँ आपरी डीकरी हूँ, रजपूताणी री जाई हू। म्हारै सारू ओ कँई नवाई रो काम नहीं। आपरी, म्हारी नै सगलां री लाज जोगमाया राखैला। म्हनै ओ अणचींत-वियो अवसर मिलियो है, इण सू पाछी पड़ू तो हू म्हारा कुल और मात-पिता नै लजवू। रजपूत धरम रै सारू हँसता-हँसता मरै वो रजपूताणिया धणी नै धरम दोया रै सारू मोत नै गलै रो हार समझै है। जिण में आपणै कुल री तो आ कहवत है कै—

भाटी कुल री रीत, आ अनाद सूं आवती।
करण काज कुल क्रीत, भटियाणी होवै सती॥

आपरै मनमें आमतोस्या री बात जोड़ अवसर सरम छोड़ै केम करणी पड़ी। म्हारी इण निमझाई ने माफ दिराण करावजो।"

मारी सरदार पुत्र गद्गद् होकर कहने लगे—

"बेटा! सेवास है थने। थें म्हारा कुल ने उजाल दियो। थारे जैड़ी सुलक्षणा बालकां जिण रे घर में अवतार लियो है उणरा इण पुन रूपी हुआ है वे बड़ा भागसाली है। थेंरी धर्मशीलता धर्म मैं कम दिखावणी लोगांरी ने थारे जैड़ा हुवा और मसमाळा रा संगठो रो होज काम है थने म्हारा रंग है।"

पिता-पुत्री के परस्पर सम्वाद को सुनकर कुंवरी की माता प्रेम-विभोर हो गई। उसके हृदय में आनन्द के प्रबल हिलोर उठने लगे। माता ने पुत्री को छाती से लगा लिया। नेत्रों से प्रेमाश्रु और खुशी के दुग्ध धारायें बहने लगीं। मुख से वाचा नहीं बोला। पुत्रोत्पत्ति के अतुल हर्ष का भाव एक पुत्री के अलौकिक साहस के आगे तुच्छ समझ कर माता बार-बार उसके सिर पर हाथ फिराती है। कभी उसके सिर का और कभी उसके मुख को चूमती हुई अपने को धन्य मानती है और भगवान की असीम कृपा का आभार मानती है।

बहुत अधिक रात्रि बीत जाने तक तीनों का परस्पर इस प्रकार वार्तालाप होते रहने के बाद सभी अपने-अपने स्थानों में जाकर सो गये, पर हर्षातिरेक में किसी को नींद नहीं आती। कुंवरी इधर-उधर करवटें बदलती हुई ईश्वर को बार-बार धन्यवाद देने लगी और अपने भाग्य की प्रशंसा करने लगी। वह मन ही मन में कहने लगी कि—

"ओह म्हारा भाग! म्हने परम पूज पीताजी जैड़ा धर्मात्मा और पति मिल्या जके जिको अपणो मारयो अपणो हाथ सूं उबार कमेळा ने हूं तब देखसो सिर-साथ रै बारै मसी होऊंला। भगवान थारी माया

अकल है। थारी गत कोई नहीं जाण सकै। प्रभू! म्हारी आ कामना थूं फलीभूत करजे। हूं थारी सरण में हूं।"

इस प्रकार उमंग और आशा की लहरों में बहुत सी रात बीत गई, तब कहीं निद्रादेवी ने कुंवरी के पवित्र जाग्रत संकल्प-विकल्पों को हठात् बंद करके अपनी सत्ता के अधीन इन्हें परिवर्द्धित रूप से स्वप्न में परिणित कर दिया।

ठाकुर, ठकुराणी और कुंवरी—इन तीनों के आनन्द का आज पार नहीं है। पुत्र जन्म, पुत्र विवाह, और युद्ध में विजय ये तीनों अवसर जीवन की सुख-साधना में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और परमानद के अवसर हैं। किन्तु आज एक पुत्री के जन्म और उसके दैवी-माया युक्त अतुल साहस ने उन तीनों, पुत्र से प्राप्त होने वाले सुखों को मात करके अपने माता-पिता को एक अलौकिक सुख का अनुभव करा दिया। लघु-वयस्क एक क्षत्री बालिका ने समस्त क्षत्री एवं आर्य-हिन्दू जाति की कीर्ति—पताका को अद्भुत शान के साथ सर्वोच्च फहरा कर अपने तीनों कुलों को उज्वल कर दिया।

रत्न जड़ित रंग-विरंगे चंदोवों मे तान कर ढक दिया गया था। स्थान २ पर बनाये गये द्वारों के स्तम्भों और चंदोवों में कारचोवी का काम, स्फटिक दीपक और रंग-विरंगे गोले नभ-मंडल के ग्रहों की भाति प्रकाशित होते हुए जान पड़ते थे। रंग-विरंगे तोरन, ध्वजा और वंदन-मालाओं से आच्छादित दुर्ग की शोभा तो इन्द्र पुरी का स्मरण करा रही थी।

महाराजा गजसिंह ने इस अपूर्व विवाह की अपूर्व खुशी की उन्मत्तता में अपने कोष का द्वार खुला कर दिया था। किसी भी विभाग के लिए व्यय-निरूपण का कोई विचार नहीं था। जितना धन जिस मद के लिए खर्च किया जा सकता था उसको परिपूर्ण और सांगोपांग बनाने के लिए उतना ही धन खर्च करने की महाराजा ने खुली आज्ञा दे रखी थी। महाराजा की यह उन्मत्तता एक पवित्र और स्वाभाविक उन्मत्तता थी जो नोगाजी और भटियानी के अपूर्व त्याग के द्वारा उनके अंत-करण में वार वार उठने वाली आश्चर्यमय विचार-तरंगों के कारण उत्पन्न होतीं थीं। इन अनोखे वलिदानों के कारण, आर्य हिन्दुओं की ध्वजा सर्वोच्च फहराकर एक नवीन आदर्श उत्पन्न करने में जितना भी भरसक योग वे दे सकते थे, उसमें वे अपना जीवन सार्थक समझ रहे थे। कहा भी है—

> जिकां भला धन जोड़ियो, ऊधमियो निज आच।
> कीरत पोहरें-करण रै, वीदग ऊठै वाच॥
> मन कछवाहां धन मँही मन सीसोद मरोद।
> मन हाडां हठ मोकली, रीझ मना राठोड़॥

लग्न में एक दिन शेष है। छोटे-मोटे सहस्रों आमन्त्रित व्यक्ति जोधपुर पहुँच चुकेहैं। नगर की प्रजा में आज नोगाजी की वरात को देखने की बड़ी उत्कंठा से प्रतीक्षा की जारही है। समय पर स्थान नहीं मिलने के

कारण नर-नारियों के असंख्य झुण्ड घरों के झरोखों और छतों पर सवेरे ही जाकर बैठने लग गये थे। मध्याह्न में तोपों की बाढ़ सलामी के साथ बरात ने किले से प्रस्थान किया। बड़ी भारी सेना के रूप में असंख्य हाथी, घोड़े और ऊंट एवं पैदल इत्यादिकों की जब बरात जिसमें कई राजा, महाराजा, नवाब और बड़े-बड़े सरदार अपनी भिन्न-भिन्न वेष-भूषा में पृथक-पृथक सेनाओं के साथ एक निराली शान से हाथी और घोड़ों पर सवारियां किये हुए बरात की शोभा बढ़ा रहे थे—

छत्रपती यता मिलि जुड़त छत्र,
तिल-मुरट पड़त नह मोम तत्र ।

बरात के अनुपम क्रम की शोभा देखते ही बनती थी। निशान लिये हुये आगे हाथी वर-राजा की सवारी धीरे धीरे चली। अपार जन-समूह झरोखों और घरों की छतों से जयजयकार करता हुआ महाराजा गजसिंह और सोनगजी के ऊपर कुंकुम युक्त अक्षत और पुष्पों की वर्षा कर रहा था। वीरवर सोनगजी की सवारी अमूल्य वस्त्राभूषणों से सजे हुए एक सुन्दर और बड़े हाथी के ऊपर थी। दो सरदार हौदे के भीतर अगल-बगल में खड़े चंवर डुला रहे थे और उनके पीछे खड़े दो सरदार मोरछल कर रहे थे। हौदे के पिछली बगल में बैठे एक सरदार मोहरों और रुपयों की निछरावल कर रहे थे। अत्यन्त मनोहर शृंगार किये हुए अद्भुत शौर्य युक्त सुन्दरता की खानि सोनगजी कामदेव और इन्द्र की सवारी को भी लज्जित करते थे।

उपै सोवि नौ सास ई वा अपारा,
तिर्फ आँखि साजोवि रा मोम-धारा ।

मारवाड़ का एक आटीला सरदार जो समस्त भारत की हिंदु जाति की चिर-प्रसिद्ध मान-मर्यादा और आन पर हँसते-हँसते कुरबान होने जारहा है जिसकी अलौकिक प्रसन्नता से प्रभावित होकर महाराजा गजसिंह ने आज उस पर सर्वस्व न्योछावर कर दिया। तोगा जैसे वीर कुमार-सरदार को पुत्र रूप मान कर महाराजा गजसिंह अपने जीवन की समस्त आशा-लताओं को फलवती हुआ जान उसके लिये जी भरकर जो कर रहे हैं, उस करने को वे कुछ करना ही नहीं समझ रहे हैं। क्योंकि कहा है-

निज कुल जनमण परणीजण, तीजो जीपण धार।
इण सम नहीं संसार में, चाहण मंगलाचार॥
रण-चढण कंकण-बँधण, पुत्र बधाई चाव।
ऐ तीनू दिन त्याग रा, कोण रंक कुण राव॥

"युद्धार्थ रण में चढना, विवाह होना और पुत्र जन्म की बधाई- ये तीनों सुअवसर राजा और रंक के लिये समान रूप से खुशी मनाने और त्याग अर्थात् दान-नेगचार आदि में जी भर कर खर्च करने के हैं।

मानी हुई बात है। जीवन में एक-एक करके प्रकृति-संभव लोक-व्यवहार के ये तीनों सुअवसर कई भाग्य शालियों को प्राप्त हुए हैं और उन्होंने उनको सुचारु रूप से संपादन करने के लिये अपनी खुशियों को एक सीमा तक बढाने में और दानादि देने में कोई कसर नहीं रखी। परन्तु यहां यह बात नहीं। यहा तो महाराजा गजसिंह को आज एक ऐसा विलक्षण सुअवसर प्राप्त हुआ है जिसमें ये तीनों काम तीन अलग-अलग अवसरों पर नही, परन्तु तोगाजी का अपने हाथों अपना सिर उतार कर अपने कबंध के द्वारा अद्भुत वीरता से यवन-सेना में तलवार बजाने और भटियानी का उनके साथ अपने अपूर्व सतीत्व के प्रभाव से स्वयं अग्नि

सम्बन्धित का सती होने पर, दोनों महापुरुषों के पति-पत्नी युक्त थे से आश्चर्यपूर्ण विशेष काम अब तीनों कर्मों के अतिरिक्त बताते गौण कार्य एक ही अवसर में एक ही साथ करते जा रहे हैं। तीनों शुभवसर-प्राप्त भाग्यशाली जनों का कार्य अपनी प्रशंसा के स्वार्थोद्देश एवं व्यक्तिगत महत्व से संयोजित है। इसके विपरीत महाराजा गजसिंह को प्राप्त यह पंच-विध शुभवसर एक ऐसी अनुपम निस्स्वार्थता से संचालित है जिसके फलस्वरूप धर्म हिन्दू जाति को अपनी वंश परंपरागत सर्वोत्तम का प्रमाण-पत्र प्राप्त होने जा रहा है। एक ही प्रकार के कार्यों में स्वार्थ और त्याग के उदाहरणों की कैसी सुन्दर तुलना है! धर्म और देश के प्रति एक राजा की भक्ति का और परस्पर शत्रु के नाम से अभिहित दो जातियों में भ्रातृत्व का कैसा उत्तम और अनुकरणीय उदाहरण है! अस्तु।

नगर से बाहिर जाकर बरात भाटी सरदार के गांव की ओर अग्रसर हुई। संध्या होने के पूर्व बनिपाला-नगर के निकट प्राप्त उस स्थान पर पहुँच गई जहां भाटी सरदार अपने सम्बन्धी और प्रजा-जनों के साथ सम्मेलन (अगवानी) करने के लिये पथ देख रहे थे। प्रथानुसार स्वागताचार और परस्पर-संभाषण हो चुकने पर बरात बनिपाला-नगर में चली गई। यथास्थान सब को उतारा दिया जाकर थोड़ी देर विश्राम कर लेनेके बाद ब्याह की तैयारी होने लगी। निमंत्रित बरातियों ने अनेक प्रकार के सुस्वादु मिष्टान्न, व्यंजन और पेय पदार्थों के भोजन-पान से तृप्त होकर अपनी क्लान्ति का विसर्जन किया। सभी पट-मंदिरों में नृत्य, गान और आमोद-प्रमोद निदर्शन होने लगा। ताल, लय और स्वर इत्यादि के साथ नर्तकियों के नुपुरों की छमछम के मधुर और मनोहर निनाद से इन्द्रपुरी की झलक हो रही थी। रात्री का अधिक भाग इस प्रकार आनन्द-प्रमोद

में और शेष भाग शयन में व्यतीत कर प्रातःकाल ब्रह्म-मुहूर्त में सभी जनेती स्नान-सन्ध्यादि नित्य कर्मों में प्रवृत्त होगये। उस समय का जनिवासा-नगर अतीत काल के ऋषि आश्रमों की स्मृति करा रहा था कहीं वेदध्वनि हो रही थी, तो कहीं तालाब में स्नान करते हुए भागीरथी आदि सप्त-सरिताओं का स्मरण, प्रातःकालीन प्रार्थना-स्तोत्र और भजन आदि गाये जा रहे थे। कहीं सेवा-पूजा की घंटियों की झनकार के साथ आरतियें उतारी जा रही थी, तो कहीं त्रिविध स्वरों में प्रभातियें आलापी जा रहीं थीं। कहीं प्रातःसंध्या, प्राणायाम, गायत्री जप एवं वेदमंत्रों द्वारा हवन-कुण्ड में आहुतियें दी जाकर वैदिक कृत्य सम्पादन हो रहे थे, तो कहीं गीता उपनिषद् आदि शास्त्रों का प्रवचन हो रहा था कहीं 'ॐ नमः शिवाय' का जप हो रहा था, तो कहीं राम नाम की मालायें फिर रहीं थीं। कहीं असुर दल संहारिणी महामाया भगवती का जाप हो रहा था, तो कहीं, अमोघ शक्ति के स्रोत वीर हनुमान की आराधना की जा रही थी। इसप्रकार उस मंगलमय प्रभात का जनिवासा-नगर-स्थित क्षत्री-समुदाय अपने ऐसे आपत्ति-काल में भी कर्त्तव्य, धर्म परायणता, निर्भयता और स्वाभिमान एवं दृढ़ता का परिचय देकर मंगलमय बन रहा था।

प्रातःकृत्य हो चुकने के पश्चात् भोजनादि कामों से निवृत्त होकर सभी जनेती आज लग्न का दिन होने के कारण उसकी तैयारी में लग गये। गोधुलूक समय होते ही बरात की पुनः तैयारी होने लगी। राजा-महाराजा एवं सरदारगण अपने-अपने वाहनों पर और सोगाजी को हाथी पर बिठाकर महाराजा ने भाटी सरदार के रावले की ओर विदा किया—

रजवट राखण मांण, करवा साचो मीर नै।
गहण भटियाणी पाण, वेगां घर सोगो चल्यो॥

भंभी सरदार के रावले की पोल पर तोरण-वन्दन प्रथा हो चुकने पर तोगाजी हाथी से उतर गये। सासु ससुर ने तोरण-द्वार पर तोगाजी का पूजन पाद-प्रक्षालन आरती आदि स्वागत कार्यों को सम्पन्न कर चुकने के बाद गृहस्थाश्रम को वास्तविक-मर्यादाओं को पालनीय व मान्य करते रहने का उपदेश देकर पाणिग्रहण के लिये गृह प्रवेश की आज्ञा दी। कुल-पुरोहित उन्हें विवाह मंडप में वेदी पर बैठाने तब कन्या को भी वहां ले आने की आज्ञा की। रूप और गुणों की खानि मनस्विनी तोगाजी के वाम भाग में बैठी हुई हिमालय के यहां भगवान शिव के वाम भाग में विराजी हुई सती के समान शोभा पा रही थीं। कमनीय कामिनियें कोकिल कंठ के समान मधुर मांगलिक गान कर रही थीं। ब्राह्मण समाज वेदध्वनि करता हुआ वेदी में आहुतियें दे रहा था। अनुकूल शुभ मुहूर्त के आते ही पुरोहित ने जब वर-कन्या का पाणिग्रहण किया, अहिछत्रा नगर में तोपों की गड़गड़ाहट से आकाश गूंज उठा। बराती मारे खुशी के फूले न समाये। इधर कन्या के माता-पिता एवं कुटुम्बीजनों ने वर-वधू के गुणों को देख उन्हें आशीर्वाद दिया और हवन-कुण्ड की अग्नि के दर्शन कर पुरोहित का महाप्रसाद लेकर कन्यादान के जनवास-वध का विसर्जन किया। तोगाजी ने अहिछत्रा नगर में आकर सर्व प्रथम महाराजा गजसिंह को साष्टांग प्रणाम किया। महाराजा ने उन्हें अपनी छाती से लगा कर आशीर्वाद दिया और सुवर्ण और रौप्य मुद्राओं की निछरावल करते हुए उनकी जागीरी के साथ और दूसरी जागीरी उनकी बाल-बोलकर को उपहार में देने की घोषणा की। एवं ब्राह्मण और कविगण आदि को ग्राम भूमि और अपार मुद्रादिक दान देकर सम्मानित किया तथा याचक-गणों को मुँह मांगे से अधिक नेगचार देकर तुष्ट कर दिया। तत्पश्चात् तोगाजी अनेक सरदार और प्रजाजनों के साथ सभी गढ़-मन्दिरों में रामा-

महाराजाओं के यहां जुहार करने को गये, जहा उन्होंने उनका भव्य स्वागत करते हुए निछरावल की और अनेक रत्न-जटित आभूषण, स्वर्ण मुद्राए और अनेक विध शस्त्र भेंट किये। तोगाजी के सखाओं ने भेंट में प्राप्त इन इमी वस्तुओं को महाराजा के सम्मुख लाकर रख दी। महाराजा ने उन्हें तोगाजी के घर उनके गाव को भेज दिया।

महाराजा गजसिंह ने उनकी निजी वंश-परम्परागत विशेषताओं के अनुसार ही नहीं किन्तु उनसे भी विशेष अनेक नवीन और अपूर्व एवं महत्वपूर्ण विशेषताओं के साथ अप्रतिम आर्य आन के इस समर विवाह संस्कार का अपूर्व समारंभ और उल्लास के साथ सम्पादन किया।

सरदारों को जब इस बात का पता लगा कि तोगा जी कल रात अन्तःपुर में नहीं गये हैं, तो उन्होंने इसकी चर्चा महाराज गजसिंह जी से करते हुए कहा कि—

'अन्नदाता तोगाजी है तो अकलवान पिण कठैई-कठैई वे महोत जरूरी काम में भी भूल कर देवै है। इण मोकै भटियाणीजी सूं तोगाजी रो मिलणो कित्तो जरूरी है। एक दूजा रै आपस में बातचीत किया बिगर कँई' ठा' पड़ै कै आगै कँई करणो नै कीकर करणो? म्हारा गाजा-बाजा तो इणारै ऊपर ही ज है, वे आपस में मिलनै कोई सला-सूत ही नहीं करै! परमेसर करै नै सावधान रहजावै तो कित्ती मोटी खुसी री बात हुवै ?"

महाराजा नै कहा—"तोगाजी थांरी बात नै मान जावै ऐड़ो म्हनै भरोसो नहीं। पिण आप कहवो हो तो आप मांहि सूं ५/७ जिणा डाढीक हुवै जिकै जायनै समझायस करनै देखलो। उणारा मन उपरांत खात्र करसी नहीं। कोई नवो फिदको नहीं पड़ै, इणरो ध्यान राखजो। धीमाई और लाचारी सूं काम लिराइजो। मान जावैला जद तो मियाद बधावणरो प्रबंध भी करणो पड़ैला।"

महाराजा की आज्ञा पाकर सरदारों ने तोगाजी के पट-मन्दिर में प्रवेश किया और उन्हें जुहार करने के पश्चात् यथास्थान बैठ गये। बहुत सोच-विचार के बाद उन्होंने हिम्मत करके कहा—

"म्हे आज मीर खांनजाखान नै बादसा कनै १२ महीना री फेर मियाद लेवण सारू इण कारण भेजां हा कै आप जिसा प्रतापी वीर पुरसा रै संतान हो जाय तो आपरो वंस कायम रहजावै नै आपरैं जिसा अनोखा प्रतापी वीरा आपरैं पछै फेर दरसण कर सकां। इण मंढिये काम में भी आप दोयां री मिलणो बहोत जरूरी है। म्हां सगलारी आपनै आ अरज

है के आप म्हारे कोटड़ियां में अरज पधारण रो हुकम फ़रमावो।"

तोगाजी ने कह्या— आप भगवां री सिरदार बड़ा ने मालक हो। आपने म्हां'ने ऐसो कहणो जचै नहीं। आपने इसी रीत करणी है कै म्हें कोटड़ियां में नहीं जावूं ला। म्हारै संग्राम री म्हने कोई अरज नहीं दीसै। म्हारो धर्म ने म्हारी आ तरवार म्हारा वंस राखैला। तोगा रै वंस में एक मामली वीर रा दरसण नहीं, पिण तोगा री आ तरवार ने बचारो रजपूती रगत सईक्यां तोगा पैदा कर आपने इयांरा दरसण करावैला। वीर में सूतोड़ा रजपूतां री नस-नस में म्हारी आ तरवार इयांरै रगत री सनसनाट ने वरस कराय, वठै हजारों अमोला मतवाला वीरां रा दरसण आप कर सकोला, उठै तोगा री एक मौताद इयांरै सामने कोई गिणत में नहीं। अब रही भेजिय काम री बात, सो इणमें भी म्हारा मिलणो जरूरी नहीं है। मैं दोनूं जिका इण काम ने करण रो जे पार चाकरा रा भिखार मिळणे नहीं लियो है। अपरी अपणी खुद री जिम्मेवारी सूं मैं बल रै भरोसै माथै लियो है सो दोनों रा काम में भगवान मदद करैला। म्हारी आपस री मदद व बातचीत कोई किणी रै काम नहीं आवै। सो म्हारी वीर आप भगवां री नामूसी ने एक में मिळणनी नहीं चावां बरै सो म्हारी कोटड़ियां में नहीं जावणो ही ज ठीक है। इण पर भी आप जो हुकम दिरावो तो हूं करवाने तैयार हूं।"

महारवामी ऋषि मुनों की मीठन रचना के समान तोगाजी के विनय वचनों को सुनकर भरणागण दिग्मूढ हो गये। वे अपने होश सम्हाल कर कहने लगे—

"तोगाजी आपने धन्य है। आपरा माता-पिता ने धन्य है। आपरी जननी आपने मजीसी बाला आपरै जैसा स्वामी ने धुरी रा मलेछ, जिरसी अमर अमरपुरिया ही परवान है।

सरदारों ने निराशा की ओट में एक विशेष आशा को प्राप्त कर लज्जित होते हुए वहां से प्रस्थान किया और सीधे महाराज गजसिंह के पास जाकर सब वृत्तान्त कह सुनाया। मीर साहब भी वहां आ चुके थे। तोगाजी की महान बुद्धिमत्ता के सम्बन्ध में परस्पर बातचीत चल ही रही थी कि इतने में अपनी मित्र-मंडली सहित प्रात काल का प्रणाम करने को तोगाजी भी वहा आ पहुँचे। सबने खड़े होकर उनका सम्मान किया। तोगाजी ने महाराजा के चरण स्पर्श किये। महाराजा ने उन्हें अपनी छाती से लगाकर पास की मसनद पर बिठा दिया। तोगाजी के आने के पहले और बाद बहुत से उमराव, सरदार और राज्य-कर्मचारीगण भी प्रात काल का प्रणाम करने के लिये आगये थे और इस प्रकार एक खासा दरबार भर गया था। इस सुअवसर को देखकर मीर साहब खड़े होकर कहने लगे—

हालांकि कुँवर साहब और सरदारों की बाहमी गुफ्तगू को मैं खूब अच्छी तरह सुन चुका हूँ, उस पर वाक़ै ताअज्जुब के साथ इतनी खुशी हासिल हुई कि जिसकी कोई हद नहीं। कुँवर साहब के दिली पाक अरमानों को बयान करने में इन्सान की ज़बान कोई वक़अत ही नहीं रख सकती। वे एक ख़ुदाई नूर हैं, इन्सान नहीं हैं। इनकी कूवत की शान इनकी ज़िंदगी के साथ है। लेकिन एक ख़ास वज़ह है कि जिससे मैं उनकी राय से इत्तिफ़ाक नहीं कर सकता। इसलिये इस नाक़िस की अर्ज़ है कि कुमार साहब तो अभी बच्चे ही हैं लेकिन मैं तो क़ाफी ज़ईफ राजपूतों के ऐसे करस्मात कई बार देख चुका हूं। यह सवाल छोटी बड़ी उम्र के साथ नहीं हैं, बल्कि क्षत्रियों की नस्ल के साथ है। मैं इस बात को कभी मंज़ूर करने को तैयार नहीं कि तोगाजी जैसे जवांमर्द उस करश्मे को एक चन्द अर्से के बाद करके दिखा नहीं सकें या

करने से मुकर जावें ? कोई नाराजगी की बात भी इसमें नहीं कि जिससे उनकी शान या रुतबे में फर्क आवे ? उनका दीदार ही दुनिया की तमाम से तमाम शै को मात कर देने वाला है। फिर कोई वजह नहीं कि दुनियां के ये दो अफताब बगैर एक दूसरे से मिलकर अपनी हस्ती को ज्यादह मुनव्वर बनाने में कामयाब न हो सकें ! मैं अभी इसी वक्त हजरत सलामत की खिदमत में रवाना होकर जैसे होगा वैसे एक साथ की मंजूरी और लेकर आऊंगा। लेकिन यह बात अब सिर्फ महाराजा साहब की रजा पर मुनस्सिर रह गई है। ये फरमा दें तो कुँवर साहब फिर इनकार नहीं कर सकेंगे और सब की मुराद पूरी हो जायगी।

मीर साहब के यह कहने पर सबके विचार बदल गये। महाराज साहब ने कुछ गम्भीर भाव से पर कुछ मुसकराते हुये कहा—"सोनजी ! थांने जचती हो तो मुजरो राखबो चाहीजे।" सोनजी इस पर कुछ नहीं बोल सके। क्योंके सामने ऐसी बात पर विशेष उत्तर-प्रत्युत्तर करना उचित नहीं समझकर लज्जा के मारे सिर नीचा करके हाथ जोड़ते हुये 'जो हुक्म' कहकर अपनी स्वीकृति दे दी।

फिर क्या देर थी। राज-घरानों की परम्परा से भी अधिक उत्साह के साथ मंगल-मिलन के उत्सव की तैयारियां होने लगीं। सोनाजी के चम्पापुर में आने की स्वीकृति की बात को लेकर मीर जानजहां और सभी रसिकों ने मानो एक बड़ी विजय का काम किया हो ऐसा आनन्द अनुभव करने लगे। परन्तु सोनाजी का सारा दिन चिन्ता में निर्गमन हुआ। महाराज के सामने वचन-बद्ध हो जाने के कारण गये बिगर छुटकारा नहीं था, अतः अपनी कलाओं को अपने साथ चलने का कहकर अपना घोड़ा समय पर तैयार रखने की आज्ञा करदी। सब

मंडली ने उन्हें विशेष आनन्दित नहीं देख उनके मनोरंजन के अनेक प्रयत्न किये पर वे सब व्यर्थ रहे। आज के जैसी रसीली घड़ियों में भी उनके मुख से धर्म और युद्ध के सिद्धांतों की गभीरता के साथ नीरस बातें ही निकलतीं थीं। बिचारे सखागण उकताने लग गये।

इतने में डेढ़ पहर रात का समय होजाने पर कुछ दूरी पर से सुरीले कंठों से गीत गाये जाने की मधुर ध्वनि सुनाई देने लगी। सखा लोगों का ध्यान चुम्बक के निकट लोह की भाँति उस ओर खिंच गया। उनका नीरस वातावरण रसमय बनने लगा। एक सखा से नहीं रहा गया। उसने तोगाजी से कहा—"खमा! आज ओ गीत नैं इणारी मीठी राग कांनां नें कित्ती सुहावणी लागै है, जाणै इमरत बरसै है। वेला ऊपर हीज चीज री कदर हुवै।' तोगाजी ने कहा—वेला कई चीज है, थे समझो ही कोनीं। वेला री चोखी-भूंडी लहरा रा सुख-दुख में कायर मिनख अलूझै। खरो मिनख नैं सूरमों तो वो हिज है जिको वेग सूं वहतोड़ी संसार री लहरा में नहीं तणीज वानै आपरै मते लेय जावै। वेला मिनखां रै पैदा कियोड़ी है, अपणै कियोड़ा करमा रो कुदरती जवाब है। धीरजवान पुरस वेला नै कोई चीज नहीं समझै। वारी निगे में वेला सूं उतपन सुख भी दुखारो हिज कारण है। जिकै इणारी लहर में तणीज जावै वानै साचे सुख रो पतो नहीं पड़ सकै सखा बात को काट कर कहने लगा— "खमा! राज फरमावै जिका बात तो साची है पिण दूजी कानी यूं भी कहवै है कै—

संसार में नह कीधो अधर-पान सुंदरी रो,
कीधो मन नह अपत जेण नर किंकरी रो।
लूट्यो भव-विलास नह सुरग सुख जगारी,
वृथा लियो जनम आय जगमें बिहारी॥

तीसरी दो सखियों का उत्तर—

पगां रुणझुण पायल लाया, नेवरिया हीरा जड़ाऊ ।
सारा थोका नाथै आया, मिरै सुहाग वधाऊ ॥
सरदार बनड़ो ऐडी-ऐडी रीते आयो ॥ २ ॥

कुछ समय सुन लेने के पश्चात् तोगाजी की उकतान ने सखा-मंडली के आनंद में विघ्न डाल दिया। उन्होंने कहा—" हां, तो अबै कँई आपानै तयार हो जावणो चाहीजे ? " एक सखा ने कहा—"हुकम ! लुगाया रथ मांहे सू उतरनै राज रै तिलक काढैला नै नाळेर देवैला, पछै बहीर होयाँ पड़ैला। "

रथ ज्यों ही पटमंदिर के द्वार पर आया, सखियों ने उतर कर गीत गाते हुए उसमें प्रवेश किया। सखा-मंडली में बैठे हुए तोगाजी के सामने आगे बढ़कर एक सखी ने अपने स्वर्ण थाल में से अपने अंगूठे पर कुंकुम लगा कर तोगाजी की ललाट पर तिलक निकाला और उस पर अक्षत चढाये। तोगाजी ने इसके उपलक्ष में पांच स्वर्ण-मुद्राएं थाल में रखीं। सखी ने ग्यारह स्वर्ण-मुद्राओं सहित एक स्वर्ण-मंडित श्रीफल तोगाजी के हाथों में दिया। तोगाजी ने उसे सिर झुकाकर प्रणाम करते हुए नवसगम-निर्मंत्रण को स्वीकार किया।

प्रथम-मिलन निर्मंत्रण-क्रिया का सम्पादन करके सखिया लौट कर अपने रथ में सवार होगई। इधर अश्वपालों ने घोड़ों को हाज़िर किया। तोगाजी और उनके सखाओं ने अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर रथ के साथ भाटी सरदार के रावले की ओर प्रस्थान कर दिया।

रावले की ड्योढी में पहुचने पर गृह-देवताओं की पूजा और वर की बौद्धिक परीक्षार्थ गूढा पहेलियों के प्रश्नोत्तर इत्यादि विधि-विधान

पड़े है। ज्याव अरथात पति पत्नी रो मिलाण, इण गृहस्थी रूप रथ नै चलावण सारू रथ रा दो पइड़ा है। इणा दोनूं पइड़ा, विना गृहस्थ-रथ एक सूत भर भी आगे नहीं चाल सकै और उणारै ऊपर निभणवाला अन्य तीनूं ही आश्रम जथाजोग टिक नहीं सकै। दूजी बात, मुदत समूधी १२ दिना री हीज रही है, जिणमें आंपणै कोई संतान पैदा हो सकै नहीं। नै जो कदे ही मुदत जादा होवती भी तो भी अब आपणो धरम संतान पैदा करण रो नै उणसूं मोह लगावण रो रयो ही नहीं। आ बात तो अब ईश्वर आपणा अधिकार में राखी हीज नहीं। इण सिवाय मिलण री दूजी कोई बात ही नहीं, पछै आवणा-जावणा में कँई लाभ ?"

भटियानी ने विनयपूर्वक कहा—"खमा, राज रो फुरमावणो सात साचो है।"

सोगाजी ने कहा—"पिण आज सगला उमराव-सरदारा मिलनै भो निरतै कियो है कै मीर साहब नै बादसा रै कनै भेज बारह महीनां री मुदत फेर मांग लेवणी और म्हनै वंस कायम राखण सारू ओढियां में भेज देवणो। इण कारण घणी खंच कीवी और महाराजा साहब आज्ञा दी जद मन रै उपरत मांडाणी आणो पड़ियो।"

विस्मित भाव से पर गंभीरता और नम्रतापूर्वक भटियानी कहने लगी—"नाथ ! संसार में पति रै नाम रो खरो अरथ राखण वाला राज सरीखा पति नै पायनै हूं आज सनाथ हुई। म्हारै जैड़ी भागसाली कोई नहीं। म्हारै भाग री बडाई रो म्हनै अभिमान है। सो हे जीवणजड़ी ! दासी रै कहवण में कोई अवलो आखर आजावै तो आप दयालु म्हनै राज रै चरणां री रज समझनै माफ करावोला नै पाछो बोध करावोला। म्हारी आ बीणती है कै सारा उमराव-सरदार नै मीर साहब आपणों वंस

भटियानी हाथ जोड़ तोगाजी के चरणों में सिर रख कर कहने लगी—"प्राणनाथ ! आप आ कँई फुरमाओ हो ! हू तो राजरै चरणां री मोजड़ी हू, उण मोजड़ी री रज हू । म्हारै में तो कँई लखण है नहीं। बड़ां रो विड़द बड़ो है सो छोटा नै ही मोटा बणाय देवै । दासी नै तो आ आसीस नै वरदान दिराओ कै जिणसूं हूँ खुशी—खुशी नै हँसती—हँसती राज रै चरणा री सेवा में म्हारो काम कर सकूं नै जनम—जनमांतर राज रै चरणां री भक्ति नै एक खिण ही नहीं भूलू ।"

भटियानी इस प्रकार कहकर पुन तोगाजी के चरणों में गिर पड़ी और बार—बार उनके चरणां का चुंबन लेने लगी। तोगाजी ने भटियानी को अपने दोनों हाथों से उठा कर हृदय से लगाया और पलंग पर बिठा कर कहने लगे—"देवी! थे कहवो सो सब ठीक है। म्हारै भाग री सराहना आज कोई नहीं कर सकै । थारै जिसी महाशक्ति नै पाय, जाणा हूँ आज नवै मानखै आयो हूँ । देवी ! हूँ सोचतो हो कै म्हारी कामना म्होटी है, हू उणमें कीकर सफल होऊंला, कँई हुवैला ? पिण आज, जीवन री नाव जिण ठाहै लगाणी है, उणारो कांठो सांमा देख रयो हू । जीवन-स्रोत ! थू अनोखी आन आलूं म्हारै रण रो-साज सजैला । हू उणनै जीतूला। थू म्हारा जीवन—दीपक में तेल पूर उणारी बाट संजोवैला । म्हारी नाव उणारै बोहलै नै झलझलाट करती चांनणी में उण तीर ऊपर जायी लागैला कै जठै महा-प्रलयकारी भगवान-शंकर अपणी रुण्डमाल म्हारै गलै में घाल देवैला और थू उण दिव्यलोक में म्हारी महाशक्ति रो असै रूप धारण कर म्हौ आत्मसात करैला । वो मेलावड़ो कैड़ो अनोखो और फूटरो हुवैला, देवी ?"

इन सभी प्रश्नों का समाधान सम्मिलन के पूर्व ही हो चुका था। स्वर्ग—स्वप्न की कामना में सत्यता सिद्ध हो चुकी थी ।

छठा परिच्छेद

इधर सोगाजी भी अपने भाग्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए बनिवामा नगर में आ पहुचे। आज की रात उनके हृदय में वे लहरें उठीं जिनमें गोते खाते-खाते वे भगवान् भास्कर की लालिमा के दर्शन करने लग गये।

सवेरा होते ही सभी उमराव सरदारों को बुलाकर उन्होंने कहा—"म्हें आप सगला रै हुकम री तामील करली है। अब आपनै अरज है कै मीर साहब आगरा जावणों रोक दे और आज ही ज अठासू फौजी जान रो घमसांण आगरै रवाना हो जावै। बारह महीना री मुदत लेवण री कोई जरूरत नहीं। सरीर रो कोई भरोसो नहीं, नै संतान होवणी भी कोई हाथ नहीं। बारह महीना री मुदत में म्हांरै माहे सू कोई खडत नहीं हुवण री जिम्मेदारी कोई सरदार लिरावै तो फेर ठहरण री बात ऊपर विचार कियो जा सकै है, नै नहीं, तो आज ही ज अठासू बहीर हो जावणो चाहीजै।"

मरने-जीने की जिम्मेवारी कौन ले। सबने कहा—"परमात्मा रै घर री खातरी कीकर दिरीजै नै कुण देवै?"

तब सोगाजी ने कहा— "जो उणारै घर री खातरी नहीं दिरीजै तो दूजी सारी बातां ऊपर विचार करणों फिजूल है और बहीर होवण में जेज करणी भी फिजूल है। आप सारा ही अपणी-अपणी तंबूआ में पधार तुरन्त बहीर हुवण री तयारी कराय लिरावो।"

सत्यव्रत भीष्म पितामह की भांति सोगाजी की वांणी में दृढ़ता और यथार्थता जान सभी अपने-अपने तंबूओं में जाकर रवाने होने की

"मैं तो अभी तक सिर्फ यही जानता था कि हिंदू लोग दुनिया में अपनी शानी नहीं रखते, पर आज जब महाराजा गजसिंह, तोगाजी और पाकदामन भटियानी को अपने सामने देखता हूँ तो जन्नत का नज़ारा भी हकीर मालूम होता है। महाराज गजसिंह! आप एक इस दर्जे के इन्सान हैं कि जिनके दिल में इन्सानियत, मुहब्बत और सदाकत कूट-कूट कर भरी हुई है। हिंदू और मुसलमान दो जुदे-जुदे फिरके हैं और वे एक-दूसरे से अच्छे-बुरे हैं—ऐसी क़ौमियत की गंदी बू आप में नहीं है। आप एक सादिक हिंदू हैं और दुनिया के वफादार दोस्त हैं। आपने तोगाजी और भटियानी जैसे पाकदामन और जवांमर्द खुदाई नूर के दीदार कराकर मेरी जान बख्शी है और क़ौम के ऊपर एक जबर्दस्त छाप जमादी है, जिसका बदला चुकाना इन्सान की ताक़त के बाहर की बात है। हिन्दुस्तान में मुसलमानी सल्तनत और मुसलमानी रिआया के ज़रिये हिन्दुओं के ऊपर होने वाली तबाही के ज़माने में आपने कौमी-मुफ़ारक़त को हटाकर जिस बिरादराना रिश्ते को कायम किया है, वह आप जैसों ही का काम था। मैं तो क्या, पर कोई भी ईमानवाला मुसलमान ऐसे ज़माने में क़ौम के ऊपर किये गये आपके इस अहसान को कभी नहीं भूल सकेगा।" इतना कह कर मीर साहब महाराजा और तोगाजी को बड़े अदब के साथ सलाम कर अपने स्थान पर बैठ गये। उमराव और सरदारगण इत्यादि पुन अपने कामों में लग गये।

हुई थी, जिसमें २५।३० अतिथिजनों के आराम कर सकने भर का पर्याप्त स्थान था।

गाव वालों ने तोगाजी के साथ महाराजा साहब आदि के आने की बात जब सुनी तो वे फूले न समाये। उन्होंने उनके स्वागत की बड़ी भारी तय्यारी की। स्त्री-पुरुषों के झुंड के झुंड उमड़-उमड़ कर गाव के फलस पर एकत्र होगये। ज्योंही उनकी सवारी फलसे पर पहुंची, बधावा और मंगल गीत गाती हुई सुहागिन-स्त्रियों ने प्रथम तोगाजी और भटियानीजी की दूर्वा, पुष्प और नारियल आदि मांगलिक पदार्थों से भेंट-पूजा की और अक्षत युत कुंकुम से तिलक किये और फिर महाराजा आदि अतिथिजनों को भी तिलक आदि करके बधाया। पुरुषों ने बड़े स्नेह उमंग और गर्व में हर्षोन्मत्त होकर ढाल, थाली, वरघू और सहनाई आदि बाजे-बाजों और जयनाद के साथ अत्यन्त उल्लास से नाचते-गाते हुए उनका अपूर्व स्वागत किया और उनकी सवारी के साथ नाचते-गाते गाव में प्रवेश कर उन्हें तोगाजी के रावले पहुंचा दिया।

तोगाजी ने महाराजा आदि को कुछ और झोंपड़ों में यथायोग्य स्थान देकर ठहरा दिया और फिर अपनी माताजी के पास जाकर उनके चरणों में दण्डवत किया। इधर भटियानीजी ने भी अपनी दासियों के साथ पड़वे में प्रवेश कर माताजी के चरणों में प्रणाम किया। दासियों ने भी चरणस्पर्श और पगचंपी करके पुत्रवधू भटियानी का परिचय दिया।

नख-शिख तक बहुमूल्य वस्त्राभूषणों से अलंकृत रति के समान कमनीय पुत्रवधू को देख और नौकोटी मारवाड़ के स्वामी जोधाणनाथ महाराजा गजसिंह और मीर साहब को अपने अतिथि बनने की बात को सुन माताजी फूली न समाई। पुत्र और पुत्रवधू को अपनी गोदी में बिठाकर उन्हें बार-बार प्यार करने लगी। रूप, लावण्य और सद्गुणों की

की ढलियें चबाते हुए सुड़बुड़ाट करने लगे और कई कसूंबे की परस्पर आग्रह के साथ मनुहारें करने लगे। रिहाण के पश्चात् चाकर लोग कई प्रकार के मेवा-मिष्टान्नों के खारभंजणों के थाल भर कर उनके सम्मुख पेश कर रहे थे। सरदारगण अपनी-अपनी रुचि के अनुसार उनमें से कुछ-कुछ लेकर अपने मुंह का स्वाद सुधारने लगे।

संध्या को जब ब्यालू का समय हुआ तो महाराजा और मीर खानजहा एवं सरदारों के लिए थाल परोस कर लाये गये। भोजन की सादगी और विविधता अनुपम थी। जीवन में प्रथम बार इस प्रकार भोजन पाकर उसकी सरसता से तृप्त ही नहीं होते थे। कैर, कूमटिये, सागरियें, ईलारिये, ग्वारफली चँवराली, खेलड़े, फूपड़े और फोग इत्यादि के अनेक स्वादिष्ट ओलण एवं भाति-भांति के व्यंजन और पर्याप्त दूध दही के साथ केशर के समान पीत वर्ण नवीन बाजरी के टटके घृत से पूरित सोगरों के सादे भोजन को पाकर अपने जीवन की एक बड़ी भारी कमी को पूरा हुआ मान अपने को धन्य मानने लगे। भोजन करते जाते थे और उसकी पवित्रता, स्वादिष्टता की प्रशंसा के साथ मनस्वी तोगाजी की भी प्रशंसा करते जाते थे। सात्विक और सादे भोजन की यह सुन्दर सामग्री सास और बहू ने आज अपने ही हाथों से तैयार की थी। उसकी सरसता में भला कोई कमी क्योंकर हो सकती थी?

आतिथेय तोगाजी, भटियानीजी माताजी और प्रजावर्ग ने महाराजा गजसिंह, मीर खानजहा और सरदारगणों को अपने यहा अतिथि बनने की अपूर्व प्रसन्नता मनाते हुए तन-मन धन से सेवा करके उन्हें मुग्ध कर दिया।

ग्राम निवासियों की सरल प्रकृति, निष्कपट प्रेम, पवित्रता अतिथि-सत्कार की अनुपम भावना, सौहार्द सौजन्यता सादा रहन-सहन और

पुत्र और पुत्रवधू माता के सन्मुख संकोच के कारण सिर नीचा किये और हाथ जोड़े हुए बैठे हैं। चरणों में सिर रखकर तोगाजी ने कहा।

'माताजी ! राज रा चरणा रै रज री हीज कृपा है नहीं तो म्हारै सिरीसा निकाम इण बातां में कँई समझै। आपरी दिन रात री सिखामण म्हनै आज इण मारग ऊपर लाई है। इणमें म्हारी बड़ाई कँई नहीं। राज रै चरणा री हीज प्रताप है। अब आप म्हांनै वा आसिस दिरावा कै जिणसू म्हे आपरी सिखानैंण अनुकूल म्हारा काम नें-हँसता हँसता करानै सफल हुवां।" भटियानीजी भी साथ का साथ कुछ कहना चाहती थी पर लज्जा के मारे कुछ बोल नहीं सकीं। वे अपनी ओर का उत्तर अपने पति के समर्थन रूप में बार बार सासु के चरणों का स्पर्श कर और चरणों मे सिर झुकाकर देती थीं। माता ने कहा—

"बेटा ! जाओ। सती शिरोमणि बेटी भटियाणी ! जाओ। मा-भारती री पावन गोदमें जाओ ! नै जाओ उण जगत पिता री अलख गोद में जिण इण आर्य जाति री धजा ऊची फरकावण सारू म्हारी कूख सू अपणी विभूति रूप में थानै जनम दियो। बेटा ! थैं आज 'माता' और 'बेटा' रै नामा नै सार्थ किया। बेटी ! थैं आज 'सासू', 'पति' और बहू' रै नामां नै सार्थ किया। म्हारी जुगल-जोड़ी ! जाओ। रण-भूमि में अनन्त रूपा सू फलो-फूलो।"

पुत्र और पुत्र वधू पुन माता के चरणों में प्रणाम करने के साथ कुछ कहना चाहते हैं पर कहा नहीं जाता। नेत्रों से आंसू टपकाते हुए और हाथ जोड़े हुए खड़े होकर उलटे पावा पदवे से बाहर निकलते-निकलते पुन दौड़कर माता के चरणों में लिपट जाते हैं और गिड़गिड़ा कर कुछ कहना चाहते हैं कि दीवाल के सहारे खड़े अश्रु-धाराओ से

नज़ारे को अपनी आंखों से देख रहा हूं उसको बयान करने की ताक़त मेरी ज़बान में नहीं है। आपका प्यारा बेटा, मेरी जान बख्शनेवाला ही नहीं है, लेकिन खलक़त की लाखों ज़िंदा-मुर्दा-दिल-बेजानों में जान फूंक कर उन्हें सान्कि और पाकमर्द बनानेवाला है। वह दुनिया को अपने फराइज़ का सबक़ सिखानेवाला है।

माताजी ने कहा—"मीर साहब! आप नैं महाराजा साहब जैड़ा भारत माता रा सपूता री विरद है जिकै छोटा नै ही बड़ा समझै। आप अैड़ा वचन नहीं कहवो तो दूजो कुण कह वैला? म्हारै में तो बड़ाई करण जैडी नवाई री कोई बात है नहीं। क्षत्री-धर्म री अै साधारण बाता ही जिण मिनख में नहीं हुवै, तो वो मिनख कठै नै क्षत्री कठै?'

अप्रतिम शौर्य और तेजोमयी इस वृद्धादेवी के वचनों को सुन कर महाराजा और मीर साहब माताजी के चरणों में गिर पड़े। माताजी ने उन्हें उठाकर हृदय से लगाया और अपना वरद-हस्त उनके मस्तकों पर रखा। महाराजा और मीर ने अपने को धन्य मानकर शुभाशीर्वाद के साथ प्रस्थान करने की आज्ञा मांगी। उनके साथ तोगाजी ने भी चरणों में सिर रखकर विदा लेने की प्रार्थना की। गोदी में ली हुई भटियानी को बार-बार प्यार करती हुई अत्योल्लास के साथ माताजी ने कहा—

"बेटा! आज री घड़ी धन्य है, म्हारो भाग धन्य है। आज म्हारो सपूत अपणै धणी नै देश रै वास्तै कुरबाण हुवणनै जायरयो है इणसू इधकी वेला रजपूत रै वास्तै अपणी जिंदगीमें कँई हुमकै? बेटा! थैं आज क्षत्रियाणियां रै वज्र जैड़ा दूध रै पराक्रम नै जगत में पाछो छावो कर दियो। म्हारी कूख सू जनम ले थैं आज म्हनै सपूती कहवाय दी,,

माताजी ने महाराजा से कहा—

उठाकर अपने हृदय से लगाया और उन पर अपना वरद-हस्त फिराकर अपने-अपने वाहनों पर आसीन किया।

स्नेह और करुणा युक्त इस अपूर्व त्याग का दृश्य अनिर्वचनीय था। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो आद्य ब्रह्मशक्ति ने लोक-कल्याण के हित सत, रज और तम-इन त्रिगुणों की प्रतिकृति धारण की है एवं अपनी विश्व विजयिनी भुजा उठाकर सान्त्वना प्रदान कर रही है।

माताजी के वीरोचित वचन अप्रतिम साहस और आशीर्वाद से प्रभावित विजयोन्मुखी वीरों ने अपूर्व गर्व और प्रसन्नता के साथ तोगाजी के स्थान से प्रस्थान कर दिया।

———o———

हैं लिखणिया आजलग, निरबीजा धरनाय।
वंश उजालक बाहुड्या, मिलै कृपया मांय॥

परिच्छेद आठवाँ

अपने जीवन में इसप्रकार की अनेक छोटी-मोटी अलौकिक घटनाओं के घटने का वर्णन करते हुए भोजन समय तक महाराज गजसिंह अपने साथियों सहित अमिताभनगर में आ पहुँचे। उनके आते ही योगाजी के गांव की माताजी और मणिवाली जी के दिव्यगुणों की चर्चा समस्त नगर में फैल गई। जहाँ देखो वहीं माताजी, मणिवाली जी और योगाजी के दिव्यगुणों का वर्णन होरहा है। आबाल वृद्ध सभी इन समाचारों को सुनकर आश्चर्य करने लगे। मातृकाम महात्मा के एक साथ दो अवतारों का होना मान और अपने नेत्रों से उनके दर्शन कर अपने को कृतार्थ समझने लगे। नर-नारायण विविध प्रकारसे माताजी और मणिवालीजी की स्तुति करने लगे। मन-वांछित प्राप्ति के लिये कई मनौती मान्यताएं और बातें बोलने लगे। कहींपरस्पर अबीर गुलाल उड़ाने लगे तो कहीं ताल मृदंग बजाकर देवी-स्तुति के पद गाने लगे और कहीं दुर्गा-सप्तशती के पाठ होने लगे। शक्ति-पूजा के वास्तविक महोत्सव का अपूर्व और अलौकिक आनंद आज सबके हृदय में बड़े वेग से उमड़ा हुआ था। आनंदातिरेक के प्रबल हिलोरों से समस्त समाज उन्मत्त हो रहा था। उस काल के भीतरीकर में इस प्रकार स्वाभाविक हृदयोद्गार की भावना का अनुमान होता मोमविक समझ महाराजा ने आज का एक दिन और वहीं रहकर आनंदोत्सव मनाया जाने की आज्ञा कर दी।

दूसरे दिन स्नान-संध्यादि नित्यकृत्यों से निवृत्त होकर सभी अपनी जल-यात्रा की तैयारी में लग गये। सिपाहियों के प्रस्थान की सम्पूर्ण तैयारी होजाने पर कुल पुरोहित ने शुभ मुहूर्त में महाराजा के द्वारा योगाजी और मणिवाली जी की अक्षत कुंकुम आदि से पूजा कराकर उन्हें रवाना करने की विधि का सम्पादन किया। उनके रथ में

यरा होते ही तोपों की दनदनाहट और तुमुल जयनाद से आकाश गूंज गया। सहस्रों अस्त्र-शस्त्रधारी अश्वारोहियों के साथ तोगाजी का रथ ललित्रामानगर के बाहिर आकर खड़ा हो गया। अनेक हाथी, घोड़े और ऊंटों पर सभी राजा-महाराजा और सरदारगण अपनी-अपनी सेनाओं के साथ निराली शान-बान से सवार होकर तोगाजी के रथ के पास आकर खड़े होगये। जब सभी सेना वहां एकत्रित होगई तो सेनापति महाराजा गजसिंह की आज्ञा पाकर घोर शंखध्वनि, तोपों की गड़गड़ाहट और जयघोष के साथ उस अपार क्षत्री सेना ने वहां से आगरे की ओर प्रस्थान कर दिया। भयंकर कोलाहल से आकाश विदीर्ण होने लगा। पृथ्वी की रज ने सूर्य को ढककर घटा के रूप में सेना पर छाया करदी। मंजिल-दर मंजिल सेना अग्रसर होरही है और विवाह के अवसर पर नहीं आ सकने के कारण कई रजवाड़ों के राजा और जागीरों के सरदार अपनी-अपनी सेनाएं लेकर इस महाप्रयाण के साथ मिलते जारहे हैं। ज्यों-ज्यों सेना की वृद्धि इस प्रकार होती जा रही थी त्यों-त्यों उसकी भयंकरता भी उसी प्रकार बढ़ती जारही थी। बड़े गर्व और निर्भयता से आगे बढ़ती हुई इस महा सेना ने दशवें दिन पराह्न में आगरे के समीप भगवती कालिन्दी तट पर अपनी यात्रा का इतिशुभम् कर दिया।

सूर्यवंश की श्रेष्ठता को अमर कर देने वाले विजयोन्मुखी अपने वीर सुपुत्रों को अपनी पुत्री जगत्तारिणी भगवती यमुना के विशाल अंचल में विश्राम दिलाकर भगवान भास्कर भी अपनी दिन भर की थकान मिटाने के लिये अस्ताचल पर विश्राम करने को चल दिये।

पतितपावनी यमुनाजी अपने बन्धुओं का अपना अतिथि होने का सौभाग्य मान उमड़-उमड़ कर उनकी स्वागत-सेवा कर रही थी। असीम सौंदर्य-सुखमा-सम्राज्ञी संध्या सखी और शांतिदायक और गुणमयी

गति से भाग रहा था, जार और चोरों को आश्रय देनेवाला अन्धेकासुर नामक महा निशाचर शान्त वातावरण को कलरव मय बनाता एवं कमनीय कामिनियों को अपने प्रेमियों से वियोग करता हुआ भयभीत होकर आगे-आगे भागता जारहा था।

उमड़कर आई हुई इस प्रलयकारी बाढ का अचानक आना सुन शाहजहां के दिल में घोर उथल-पुथल मचगई। और जब उसे पता पड़ा कि उसने आगेरा से डेढ दो कोस दूर जमुना पार अपना पड़ाव डाल लिया है, तब तो और भी उसके दिलमें अधिक खलबलाहट मच गई। सेना, राज्य कर्मचारीगण और नगर निवासी सब के दिलों में एक ऐसी परेशानी ने दखल कर दिया। जिसके मारे उनका खाना-पीना सोना-उठना हराम होगया। रात है कहाँ जायँ? क्या करें? किसकी शरण में जायँ? बाल बच्चों को कहा ले जायँ? धन माल का क्या होगा? इस प्रकार लोगों के दिलों में घबराहट का एक भयंकर दृश्य दिखाई देने लगा। कभी भय से व्याकुल होते हैं, तो कभी अपने अपने इष्ट का स्मरण करने लग जाते हैं। आगरा नगर में बड़ी विकट स्थिति पैदा होगई।

शाहजहा ने रात को अपने कुछ गुप्तचरों को इसका पता लगाने के लिए भेजा। परन्तु जब उन्होंने वापिस आकर यह उत्तर दिया कि खुदावन्द! हम इस बात का तो पता नहीं पा सके कि यह किस गनीम की फौज है, क्योंकि उसमें कितने ही रजवाड़ो के रईस लोग और टिड्डी दल के मुवाफिक उनके लश्करों ने जमीं को ढक दिया है। इतना आदम जात हमने तो कभी देखा ही नहीं। कुछ कह नहीं सकते-कहर है या क्यामत? खुदा जान बख्शे खुदा जान बख्शे' कहते कहते भाग कर आए हैं।" यह सुनकर शाहजहा के रहे- सहे होश भी उड़गए। उसकी आंखो

परिच्छेद ६ वाँ

शाहजहां ने दूत को सन्मान देकर विदा किया सवेरा होते ही दोनों ओर तैयारियां होने लगीं। दूत के कहे गए समाचारों के अनुसार शाहजहां ने समस्त नगर में यह प्रबन्ध करा दिया कि तोगाजी की नगर यात्रा (जुलूस) जिस समय नगर के बाज़ार और गलियों में भ्रमण करे, किसी भी प्रकार का उपद्रव नहीं होने पाये। इधर महाराजा गजसिह जी ने सभी राजा-महाराजाओं एवं सरदारों को आगरा में नगर के बाहर अपनी छावनी में ठहरा कर उनसे इस प्रकार परामर्श करने लगे। उन्होंने कहा कि-'कियी तरै री धोखा-बाजी होवण री उमेद तो नहीं है, पिण बादसा मन रो मैलो है। जाणों कँई नें वेला माथै कँई निपज नै ऊभी रहै। आपा सवारी काढ़ण रो विचार तो कियो है पिण ओ काम जोखम सू भरियोड़ो हैं। जो सावचेती नहीं रखीजी तो अनरथ हो जावैला। सो निभणी में आवे जिसो काम करजो, क्यू कै ओ काम एड़ो कँई जरूरी है नहीं।" इस पर उमराव सरदारा ने कहा कि-"हमा साराही मिलनै विचार कियो है कै बादसा जो ऐडी चलाकी कर नवो झगड़ो खड़ो कर देवै तो उणनै जीवतो पकड़ण सारू मंगराम माड लेवणो। तोगाजी नै साती आच पूगणरी कोई भी बात सुणवा मे कै देखवा में आगई तो लोही री नदियां वैवाय देवाला। तोगाजी रै खातर सईकड़ा रजपूता रा माथा कटिया पछै लड़णरो नै सईकड़ा ही सतिया होवणरो तमाम्रो कैदमें बैठोड़ा बादसा नै देखाय देवाला। तोगाजी रो बाल भी बाको नहीं होवण देवाला। सवारी दिसा काल जो बाता सोची थी उण माफक ही जमारो प्रबन्ध होजावणों चाहीजै। बारली हमा सभाल लेवाला।" महाराज साहब ने कहा-"जरै ठीक है। पिरमू सवारी काढण रो हुकम बादसा दियोहै। कालको दिन आप आराम करावो। भगवान सँग ठीक करसी। सवारी

'जोधाणनाथ री जै' का तुमुल जयनाद करते हुए असंख्य सेना-समूह ने आगरे में प्रवेश किया। ज्यों ज्यों सवारी आगे बढ़ती जाती थी, कदम कदम पर खड़े शाही सेना के सिपाही और सेना-पति वीर तोगाजी को झुक झुक कर प्रणाम करते जाते थे। वीर तोगाजी के दर्शनार्थ असंख्य नर-नारियों के झुण्ड आस पास से आकर आगरा में एकत्रित होगए थे। सवारी उनके आगे होकर निकलती जातीथी और उमड़ा हुआ जन-समाज जय-घोष के साथ उन पर पुष्प-वर्षा करता जाता था।

तोगाजी की सवारी समग्र आगरा नगर में भ्रमण कर जब जोधपुर की छावनी में लौट आई, तब कहीं जाकर शाहजहां की चिंता ने भी उसके हृदय से अपना डेरा उठाया।

काम करणो है वो आपसू छानो नहीं है। आजरो दिन तोगाजी नै भटियाणीजी रै बलीदान होवणो रो है। वारै साथ आप सिगलानै हर्णीज वरे ममियोध। देख म्हारो अङ्ग अङ्ग फड़क रयो है। म्हारी खुशी री थाज हद नहीं है। दूजी छावणियां में भी मारा रजपूत मरण-मारण सारू कमर-कसनै त्यार हुओड़ा है।

बादसा को आपनै बार बार कहवणारी जरूरत तो नहीं है क्यु कै उणारी दगलबाजियां अबै आपसू छानी नहीं है, नै वो भी समझ गयो है कै राठोड़ा आगै उणारी चलाकियां चालै नहीं, पिण मीठो बोला नै जालसाजी नै ठगण री विद्या में वो बहोत हुसियार है, सो सारी रीत सू सावचेत रहवणों चाहीजै।" सरदारों ने उत्तर दिया कि-काल मीर साहब रै अठै जिण वेला सिगला उमराव सरदार विचार करण सारू भेला हुआ हा, उण वेला मीर साहब बादसा री दगलबाजीरी मारी हगीगत समझांस करनै कही ही, सो ध्यान में है। वांरी बाता सू म्हांरी आखा खुल गई। कँई रंग बरतीजै जिको आगै दी सैला। जादा कँई कहवां। मरांला नै मारांला। उणारी मीठी मीठी बाता में आवण रो बगत गयो। इण सिवाय दूजो कँई करण रो म्हानै दीसै नहीं।"

महाराज साहब ने कहा—"बस आहीज बात आपनै सुझावणारी ही। अब आप बिछायत कराय कसू बा री त्यारी करावो, सिगला बसारां में तेड़ो फिर गयो है, उमराव सरदार पधारण वाला है। हाथी, घोड़ा इत्यादि रो इन्तजाम पिण ठामो-ठाम हो गयो है। कोई बात री अब कसर नहीं है। कसू बो लेय-लिराय नै त्यार रहवो सो बादसा री कांनी सू खबर आतां ही बहीर होयनै उणारा दरबार में जावणो।"

समय पर सभी उमराव सरदार अपनी-अपनी फौजों और सवारियों के साथ जोधपुर की छावनी में आगए। पचासों जगहों में कसू बे की

निनाद हो रही है। आनन्द पूर्वक तोपें भर भर कर धमू धा किया जाता है। विद्यार्थियों की पठन ध्वनि के समान अनेक दुन्दुभों की गुड़-गुड़ाहट होरही है। शत्रु-मण्डली से प्रबल करने वाली तुरही उसका स्वर करने के लिए उसके समीप सर्व प्रथम पहुँचने की परस्पर होड़ लगा रहे हैं। इतने में एक साथ कितने ही तोपों का एक विशेष संकेत प्रदर्शक घोर शब्द होते ही तमाम राजपूत सरदार उठकर खड़े हो गये और अपने अपने वस्त्रों को सम्हाल कर सैनिक नियमानुसार अपनी अपनी पंक्ति में खड़े होने लग गए।

समस्त उमराव और मीर खाँनजादों को साथ लेकर सर्व प्रथम महाराणा मानसिंहजी ने वीर-वर जोगाजी को हाथी पर बिठाया। उस समय वीरों का कलहा-पूर्ण यह दृश्य निराला था। सबके नेत्रोंसे हर्षाश्रु की धारायें बह रही थीं। परन्तु महात्मा जोगाजी के मुख मण्डल पर गंभीरता युक्त एक अपूर्व प्रसन्नता छा रही थी। उनके ललाट-पटल पर अखण्ड सौभाग्य-वती महासती भटियाणी के हाथों निकला हुआ अक्षय कुंकुम का तिलक उनकी गंभीरता और प्रसन्नता को शतगुणं प्रकाशित कर रहा था। उनके हाथी पर सवार होते ही उनकी जय जय कार से नभ मण्डल गूँज उठा। जोगाजी के बाद महाराज ने मल्लाम्मा के साथ मीर खाँनजादों को एक हाथी पर बिठाकर स्वयं भी एक हाथी पर सवार होगये। उसके बाद समस्त उमराव-गण अपने अपने हाथियों पर सवारी कर जोगाजी और महाराणा के हाथियों के रवाने होने के लिए तैयार होगए। प्रत्येक हाथी के आगे चार-चार घुड़सवार साथ होकर यह अपूर्व अभियान चांदनीके मैदान से बाहर आकर खड़ा होगया। तत्पश्चात् असंख्य अश्वारोही गजारोही और पैदल सेनाओं के समूह जोगाजी की सवारी के साथ क्रमशः आकर मिलते गए।

निराली श्रान थान के साथ श्रनेक राजा श्रौर उनके सामंत सरदारों
का यह श्रपूर्व गौरवशाली श्रभिगमन श्रागरा नगरी को उस दिन सर्व
प्रथम सौभाग्य प्रद हुश्रा।

निःसंदेह यवन-राज्य श्रौर श्रागरा निवासियों के लिए यह श्रलौ-
किक दृश्य एक नई बात थी, परन्तु इसमें रंच भी सन्देह नहीं कि भारत
के श्रनेकों राजा-महाराजाश्रों का यह महत्त्व-पूर्ण श्रभिगमन-समारोह
समस्त संसार के लिए नई बात थी। जूझ कर मरने की सहस्त्रों पुनरा-
वृत्तिएँ दिखाने का ठेकेदार संसार के सामने यदि कोई है तो वह भारत
ही है। यही! नहीं! इच्छा पूर्वक बिना युद्ध के श्रपने हाथों श्रपना सिर
उतार कर कबन्ध के द्वारा ही रण चण्डी को जागृत करने की श्रौर स्वयं
श्रग्नि प्रज्वलित कर सती होजाने के लिए ही विवाह करने की नर श्रौर
नारी शक्ति के श्रभिनय को भारत ही संसार के रंग-मंच पर दिखाने में
समर्थ हो सका है।

जोधपुर की छावनी से श्रागरा के बाजार में होकर लाल किले के
दरबार तक कई कोसों में उसदिन सर्वत्र क्षत्री सेना का ही पहरा था।
शहर से किले तक क्षत्री सेना के पिछाड़ी में कहीं कहीं शाही सेना के
सिपाही पहरे पर खड़े नज़र श्राते थे। शेष समस्त शाही सेना किले के
बाहर वाले मैदान में मोरचा बन्दी किये हुए खड़ी थी।

महाराज की श्राज्ञा होते ही जयनाद से नभमण्डल को विदीर्ण
करती हुई एवं सिन्धु-राग के साथ जुझाऊ बाजे बजाती हुई टिड्डी दल के
समान क्षत्री सेना लालकिले की श्रोर रवाने हुई। किले के मुख्य द्वार के
पास पहुंचकर तोगाजी श्रौर महाराजा एवं उमराव गणों ने श्रपने-श्रपने
वाहनों से उतर कर मुख्य मुख्य सरदार सामन्तों के साथ शाही दरबार
में प्रवेश किया। शाही दरबार ने खड़े होकर उनका सत्कार किया। शेष

रानी-सेना शाही-सेना के सम्मुख अपने नियत किए हुए स्थान पर आकर खड़ी होगई।

भारी कोलाहल और जयकार के होने से शाहजहां को लोगाजी के आगमन का वैसे पता तो लग ही गया था, परन्तु नियमानुसार नकीब के आकर खबर देते ही अपने अङ्ग-रक्षकों और चोबदार के साथ शाहजहां भी दरबार में आगया। उसके आते ही सभी खान उमरावों ने खड़े हो झुककर प्रणाम किया और उसके सिंहासन पर बैठते ही सभी अपने अपने आसनों पर बैठ गए।

शाहजहां ने सिंहासनासीन होते ही अपनी दृष्टि शान से भरे हुए निराले दरबार की ओर डाली। अमरसिंह और उसके सरदारों की तैयारी और सजावट एवं उस दिन की निरंकुशता और अविनयमितता को देख शाहजहां भयभीत हो गया। अधिकन्तु जब उसकी दृष्टि लोगाजी पर पड़ी तो उसके विशाल मुख-कमल की कान्ति से उसकी आंखें चौंधियाने लग गईं। वीरत्व तेज और सुन्दरता की इस साक्षात मूर्ति को अपने अतुल ऐश्वर्य के समक्ष देख लज्जित होते हुए वह और भी अधिक भयभीत होगया। उसका तापमान चढ़ने लगा।

क्षत्रियों की लिखत को वह खूब पहले से जानता था। जिस चोरी से आपने ने इस बड़ी रानी को खड़ा किया, वह उसके स्वभाव से बाहिर और उसकी मर्जी के खिलाफ की बात थी। उसकी छोटी बुद्धि के दायरे में सिर्फ इतना ही समाया हुआ हुआ था कि मालूम जवाब मिल नहीं सकेगा और हिन्दुओं की जाती तलाश रह नहीं सकेगी। लेकिन मामला उलटा होगया। लेने के देने पड़गए। एक के बदले हजारों और दो के बदले लाखों को देने की बात पर उनके आखिरत्ना सिर में इसलिए वह स्वाल होता ही कैसे? लेकिन आज आकस्मात लोगा

सुराई नूर की सफलता और उसकी अजहद दिलावरी के दीदार
से उसका दिल थोड़ी देर के लिये बदल गया। वह मन ही मन
लगा—"ओफ! या खुदा! गजब हो जायगा। लाखों बेगुनाह
मौत के मुँह में चले जाएँगे। खून की नदियां बह जायगी और हिन्दुओं
की शान चमक जायगी। उफ!! ... " एक पाखण्डी के पागल-
प्रलाप का परिचय मात्र था या उस देव-पुरुष के दीदारकी दहल थी। जो
कुछ भी पर अब क्या हो सकता था? एक हठी की हठ थी जो जबान
से निकल चुकी थी। दूसरे की शान को बिला वजह मिट्टी में मिला देने
की एक जिद थी जो अपनी ही बरबादी का सामान बन चुकी थी। मुल्क
का एक शाहंशाह—मुल्क का एक पाली, जो मुल्क को तबाह करने की
जिद पर चढ़ चुका था, जो अपनी अज़ीज़ रिआया को काफिर मानकर
कत्ल-ए-आम करने की ज़िद्द के लिए मशारूफ है—अपनी कज़ा का
सामान अपने खूरेज बेटों के सुपुर्द कर चुका था।

अनेक ऊँची-नीची लहरों से टकरा कर शाहजहा का शैतानी दिल
भड़क उठा। उसने अपने एक इक्के की ओर, जो हिन्दू भेष बनाकर
पहिले ही हिन्दु-सेवा में मिला लिया गया था, इशारा कर दिया। वह
चुपके से तोगाजी की पीठ पीछे आकर उनका सिर उतारने को छिपे छिपे
तलवार निकालकर तैयार हो ही रहा था कि राठोड़ सरदारा को इसका
पता लग गया। उन्होंने इसकी खबर आगे से आगे तोगाजी को कर दी।
तोगाजी और महाराजा गजसिंह जी को इसका उनसे पहले ही पता लग
गया था और वे सब प्रकार सावधान थे। तोगाजी ने महाराजा गजसिंह
जी को यहा आने के पहले यह साफ साफ कह दिया था कि—"बादसा
दगलबाज है, सो आप साराई उण वेला सावचेत रहीजो। म्हारो माथो हू
म्हारा हाथ सू उतारू ला नै उतरिया पछै उणनै कोई मुसलमान अडै

था कि मेरे गुप्त रूप का किसी को पता है। तलवार चलाने को प्रस्तुत वीर क्षत्री की तत्परता को लख सकने की क़ाबिलीयत उसमें नहीं थी, जिसको कि वह खुद अपनी तलवार के घाट उतारने का मिजाज कर रहा था। वह अपनी बदक़िस्मती से मदमस्ती में अंधा होकर धीरे धीरे आगे बढ़ता जारहा था। क्षत्रीगण अपने हाथों में नगी तलवारें लिए उसकी उपेक्षा किए निर्भयता से खड़े थे।

ढक्का अपने वार की दूरी से कुछ ही दूर रह गया था कि समस्त क्षत्री समुदाय एकाएक खड़ा होगया। महाराजा ने थाल सम्भाला। क्षत्री समुदाय ने वीर को प्रणाम किया। वीर ने बिजली वेग से तलवार चलाकर अपना सिर काट डाला और अपने हाथों से स्वर्णथाल में रखकर उसी क्षण ढक्का का टुक्का कर दिया। क्षत्रियों ने पुन अपनी नंगी तलवारों को ऊंची उठा और झुककर तोगाजी के सिर को प्रणाम किया। धड़ने अपनी विजयी तलवार सहित अपना वरद हस्त ऊंचा उठाकर के सबका अभिवान्दन स्वीकार किया। किले के भीतर और बाहर अपार क्षत्री समुदाय ने तोगाजी और भटियानी जी की जयजयकार से आकाश को गुन्जा दिया। इन सब क्रियाओं को करने में इतना ही समय लगा कि जितना दीपक के प्रकाश के प्रवाह को उस दरबार की सीमा में लग सकता था।

क्या होगया और कैसे होगया ? किसी को समझ मे नहीं आया बादशाह के सामने दरबार के बीच एक मशहूर बहादुर के दो टुकड़े हुए देख बादशाह और शाही सल्तनत के छक्के छूट गए। उसके बड़े-बड़े वीर और बहादुर सिपाही प्राण बचाने के लिये भयभीत होकर इधर-उधर भगाने लगे। बिचारे शाहजहा का क्या होगा, इसका ख्याल ही किसी को क्यों होता ? वह इन गीदड़ों को जानता था, इसलिए उमरावगणों के

कमल के दर्शन कर आकाश को विदीर्ण करने वाला घोर जयनाद किया। सेना में एक ओर महामाया भटियानी का रथ खड़ा था–महाराज के द्वारा लाए गये घोड़े पर सवार हो उनके साथ कबन्ध ने बिना किसी संकेत के उस ओर प्रस्थान कर दिया। महासती ने महाराज के हाथों में धारण किये हुए अपने हृदय देव के कमल (मस्तक) की पूजा की। नेत्र मूंदकर प्राणनाथ का ध्यान किया। दो प्राणों की तारतम्यता में गंगा का प्रवाह बहने लगा। वीर और वीरांगना की वीरता का व्यतिरेक मिट गया। मस्तक ने मधुर मुसकान के साथ उत्तर दिया–" देवी ! निष्कामना उदय होते ही आज मिनखा जनम पावण रो फल मिल गयो, थारो और म्हारो भेद मिट गयो। हूँ और थू दो नहीं–एक और जीवन मुक्ति हा" देवी ने साष्टांग प्रणाम किया। धड़ ने हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हुए घोड़े को द्रुत गति से नगर की ओर चला दिया। उस समय कबन्ध की शक्ति पहले से द्विगुणित जान पड़ती थी। प्रलय के समान हाहाकार मचाते और नर-मुन्डों के ढेर लगाते हुए कबन्ध ने आगरा नगर में प्रवेश किया। इस प्रलयकारी दृश्य का वर्णन किसी कवि ने इस प्रकार किया है।

॥ छन्द पद्धरी ॥

तोगाजी आय दरबार माय, बैठत रह्यो आसन्न ज्यांय।
पतसाह एक परपंच कीन, निज एका को अस समझ दीन ॥१॥
तुम जाय तोगा कर छिदहु माथ, मैं बातचीत मझ करू घात।
पतसाह कपट मँहि बातचीत, तोगा ! तु पाय अहूँ लोक कीत ॥२॥
सब मात पिता को कोइ धन्य, तो सम क्रम कोऊ करै अन्य।
[illegible] चाल्यो लुकाय ॥३॥

–छन्द नाराच–

बजार माझ ठौड़ ठौड़ छत्री वीर राजत ।
कबंध क्रोधवंत देख वीर हाक बाजत ॥
फिरयो बजार सब्ब तुरक, कोऊ ना अगै टल्यो ।
क्रुधंत काल सो लखी, कुरम्म सेसहु खिल्यो ॥
विमांण साज सूर सब्ब आयके थिरं भये ।
सजी सु हूर माल-पुहप, वमन्न भूखणाम नये ॥
सु धाक हाक योग की, दिसा चहून में बजी ।
छुटी समाध सकरह अनंत काल सू सजी ॥
विधी पठन्न बेद को विसार दीध आपनो ।
सुरप्पति सुसंक-धार, निज्ज थीर थापनो ॥
दिमान दस भूव भार, दन्त जे सही सके ।
अनन्त काल सू उठाय, आज सोगये थके ॥
सु मन्दी घन्द आप के, अनन्त काल को पड़ै ।
कबन्ध वीर को अनन्त, क्रोधस्यु नवो चड़ै ॥
डाकणण साकणी मचाय, भीड़ आय आगरा ।
मिगलु स्वान गिद्ध को, समाज जुड़ियो तुरा ॥
अनन्त काल सू मिली न धीर मुंड मालका ।
कबन्ध सीस लेण को, सु आइ मुंड मालका ॥
लिये सु साथ भूत प्रेत, आयगे धुरज्जटी ।
सु देख के लुकाय काल, जाण ना जैहों खटी ॥
चले घरं महेस के, सु लेण सीस धीर को ।
[illegible] काल [illegible] ॥

-छन्द नाराच-

बजार माफ ठौड़ ठौड़ छत्री वीर राजत ।
कबंध क्रोधवंत देत वीर हाक वाजत ॥
फिरयो बजार सब्ब तुरक, कोऊ ना श्रगै टल्यो ।
क्रुधत काल मो लखी, कुरम्म सेसहु खिल्यो ॥
विमाण साज सूर सब्ब आयके थित भये ।
सजी सु हूर माल-पुहप, वमन्न भूखणाम नये ॥
सु धाक हाक लोग की, दिसा चहून में बजी ।
छुटी समाध सकरह, अनंत काल सू सजी ॥
विधी पठन्न वेद को, विसार दीध आपनो ।
सुरप्पति सुसंक-धार, निज्ज धीर थापनो ॥
दिमान दत भूव भार, दन्त जे लही सके ।
अनन्त काल सू उठाय, आज सोगये थके ॥
सु मन्दी चन्द आप के, अनन्त काल को पड़ै ।
कबन्ध वीर को अनन्त, क्रोधस्यु नवो चड़ै ॥
डाकणा साकणी मचाय, भीड़ आय आगरा ।
सिग ल स्वान गिद्ध को, समाज जुड़ियो तुरा ॥
अनन्त काल सू मिली न वीर मुंड मालका ।
कबन्ध सीस लेण को, सु आइ मुंड मालका ॥
लिये सु साथ भूत प्रेत, आयगे धुरज्जटी ।
सु देख के लुकाय काल, जाण ना जैहौं खटी ॥
चले घरं महेस के, सु लेण सीस वीर को ।
राठोड़ काल सू भड़ै, न देख धीर धीर को ॥

करी मरंच सो घणी न धीर वीर सू कवे।
राठोड़ सिंह ग्यान तैं कमन्ध सीस ना रचे॥

इस प्रकार किले में शाही-सेना में और आगरा शहर में कमन्धार यवनों का संहार करते करते जब पूरे दो दिन बीत गये तब सर्वत्र त्राहि-त्राहि मच गई। तीसरे दिन शाहजहां ने देखा कि कबन्ध सचमुच अपनी प्रतिज्ञानुसार पाँच दिन तक तलवार चलाता ही रहा तो ग़ज़ब हो जायगा। क्योंकि प्राण रहते धड़ की शक्ति न्यून नहीं होती। उसका साहस प्रलयाग्नि के समान उत्तरोत्तर बढ़ता ही जाता है और उसकी शक्ति के अवधि परिमाण पर पहुंचा कोई कर्म प्रतिकूल कारण उत्पन्न होजाने पर वह एक दम शान्त हो जाता है। इसलिये तीसरे दिन जब शाहजहां ने मरण-प्रमाण उत्तरोत्तर बढ़ते ही देखा तो उसने जोगाजी के रास्ते में पानी में डूबी हुई नील छिड़कवादी। जोगाजी के घोड़े का पाँव ज्योंही उससे छुआ; धड़ शान्त होगया। महाराजा ने धड़ का एकाएक तलवार चलाना बन्द होते देखा तो तुरन्त ही अपने घोड़े से उतरकर जोगाजी के धड़ को सहारा देकर थाम लिया, और जोधपुर की छावनी में भटियाणीजी को धड़ शान्त होजाने की सूचना भिजवादी।

धड़ को एक ऊंचे रथ में सिंहासन पर बिठा दिया गया और उसके पास स्वयं आप में एक हाथ में जोगाजी के सिर को और दूसरे में नग्न तलवार धारे हुए महाराजा जसवंतसिंह विराज गये। सैकड़ों घुड़-सवार सैनिक नंगी तलवारें लिये रथ का पहरा देते हुए जोगाजी और सती भटियाणी का जयनाद करते हुए जोधपुर की छावनी की ओर प्रस्थान कर दिया।

महासती भगवती भटियाणी भी अपने प्राणनाथ का स्वागत करने लिये रथ में सवार हो कुंकुम अक्षत पुष्प स्वयं हाथ में लिये छावनी

के पास मार्ग में आकर खड़ी हो गई । तोगाजी के कबंध का रथ भटियानीजी के रथ के पास पहुँचते ही भटियानीजी अपने रथ में से उतर कर तोगाजी के रथ में चली गई । भटियानीजी के रथ में पांव धरते ही महाराजा खड़े हो गए । सती ने शव के खण्ड-द्वय को प्रणाम कर उसके सिर और चरणों की कु कुम अक्षत से पूजा की और कुछ समय नेत्रों को मूंद कर अत्यन्त तन्मयता से उनका ध्यान किया। महाराजा ने अत्यन्त आदर पूर्वक तोगाजी के सिर को भटियानीजी के कर कमलों में सौंप कर उस नरदेव के सिर को अपना सिर झुका कर प्रणाम किया और रथ में से उतर कर अपने घोड़े पर सवार हो गए ।

मर्यादा और लज्जा की खानि भवानी रूप भगवती भटियानी के आज बिना घू घट के मुख पर रौद्रता और शौर्य को देख क्षत्रीगण भी भय खाने लग गये। शंकित क्षत्री-समुदाय और महाराजा सैनिक नियमानुसार सती को अभिवन्दन करके उनकी प्रतीक्षा में खड़े हो गये ।

परिच्छेद ११वां

मन्त्रिगणजी ने महाराजा को आगरा के सरे-बाज़ार में होकर अभिगमन-समारोह की तैयारी करने और कालिन्दी-कूल के उस स्थान पर शीघ्र चिता बनाने की आज्ञा दी कि जिस स्थान पर आगरा को आते हुए मुकाम किया गया था।

महाराजा इसकी बहुत कुछ तैयारी करवा चुके थे। शेष काम बाकी ही था। उन्होंने सतीजी से निवेदन किया कि— आगरा हुक्म माफ़क जबरदस्ती तबाही जो होगई है वे आपको काम बेरोकटोक निबटवानी कमेर है। अरदेव और राजसी सवारी तथा दुरब-बाग ऊपर पहुँचा जिसे जिनकी तैयारी पूर्ण होजावेगा।

चन्दन, श्रीफल, कपूर, केसर, कस्तूरी, अबीर गुलाल, धूप, तिल, जव दूध मधु शर्करा, आम्र पत्र, कुंकुम अक्षत, दूर्वा, सुपारी और सिन्दूर इत्यादि सुगंधित, मांगलिक और अन्त्येष्टि क्रिया से संबन्धित समस्त उपकरण यथा विधि पूजन कर यमुनाजी के उस तट पर सारे वेदी-विधान रचवा गया। इधर सती को अपने प्राणाधार के शव के साथ विदा किए हुए दाह-स्थान पर पहुँचाने के लिए अभिगमन-समारोह की अभूतपूर्व तैयारी का प्रबन्ध किया गया।

राजा-महाराजा, सरदार और इतर क्षत्रिय वीरों की उस दिन की सजधज दर्शनीय थी। रत्नजड़ित वेश-भूषित अश्वों पर क्षत्रिय-वीर अपने-अपने वाहनों पर बैठे निजमर्याद से गर्वोन्मत्त हो रहे थे।

इस बार सवारी का प्रबन्ध और ही प्रकार का था। सबसे आगे नक्कारा और बाजा मंडली, उसके पीछे एक हाथी पर भारत का महान त्याग और मानव-जीवन का सर्वोत्कर्ष आत्मोत्सर्ग-भावना का द्योतक गैरिकवर्ण राष्ट्रीय ध्वज, उसके बाद दूसरे हाथी पर मारवाड़ का पचरंगा

झंडा और इनके पीछे सैकड़ों हाथी-जिन पर अनेक राजा महाराजा अतुल गर्व के साथ बैठे हुए सुशोभित हो रहे थे। हाथियों की कतार के पीछे महासती भटियानी का अति सुन्दर, ऊंचा और खुला रथ था जिसमें पास-पास दो सिंहासन लगे थे। दाहिने सिंहासन पर खड्ग धारण किया हुआ नरदेव वीरवर सोगाजी का कबंध और बाये सिंहासन पर महासती भटियानी सोगाजी के मस्तक को अपने हाथों में ली हुई बिराजी हुई थीं।

रौद्रता युक्त भटियानी की गंभीर एव प्रसन्न मुखमुद्रा एक अलौकिक और अवर्णनीयभाव भङ्गी का दर्शन करा रही थी। उनके वक्ष स्थल के आगे धारण किया हुआ नरदेव का मस्तक जगद्धात्री महाकाली के धारण की हुई मुण्डमाला में सुमेरु रूप प्रतीत होता था। घृत से पूर्ण खुले केशों की माग में सिन्दूर ललाट-पटल पर कु कुम-बिन्दु और केशर का त्रिपुण्ड नेत्रों मे कज्जल, नाक में बाली इत्यादि मांगलिक सौभाग्य चिन्ह धारण की हुई दिव्य क्रान्ति वाली भटियानीजी प्रलयरात्रि के पश्चात् अनन्त धाम में विश्राम करने को पधारती हुई ब्रह्मस्वरूपिणी महामाया के समान प्रकाशित हो रही थी।

रथ के पीछे असख्य अश्वारोही सरदार नगी तलवारें हाथों में धारण किए हुए थे। उनके पीछे उष्ट्रारोही और उनके पीछे पैदल सेना आगरा नगर की ओर बढ़ती जा रही थी।

ससार के दो अनूठे रत्न-सोगा और भटियानी के नाम से मारवाड़ में अवतरित होकर भारत की राजधानी आगरा में हिन्दू जाति की आन पर हँसते-हँसते कुरबान हो रहे हैं—के सम्वाद को सुनकर आजू-बाजू के लाखों हिन्दू-मुसलमान नर-नारी आगरा में एकत्रित हो रहे हैं। नगर के अन्दर और बाहर खड़े होने को जगह नहीं है।

अपार जन और पशु कलरव के बीच जयघोष और वाद्य घोष

से आकाश और कायरों के हृदयों को विदीर्ण करती हुई सती की सवारी ने आगरा नगर में प्रवेश किया। प्रत्येक घर में से उनके ऊपर पुष्प वृष्टि हो रही थी और प्रत्येक गली के मोड़ पर घर वालियों के झुण्ड पूजन सामग्री लिए सती और नरेश का पूजन पाद स्पर्श और पाद प्रक्षालन कर रहे थे। कई स्त्रियां सती माता का दर्शन करके गीत गाती हुई अपने में सतीत्व का भाव भर रही थी। कई स्त्री-पुरुष नवल वर वधू की इस युगल-जोड़ी के अपूर्व आश्चर्यकारी त्याग और उनकी छोटी उमर का विचार कर आंसुओं की धाराएँ बहा रहे थे। कई इनके सामने अपने व्यक्तित्व का विचार कर अपने को धिक्कार रहे थे और कई देश और जाति के नाम पर इनके उच्च आदर्श और त्याग के कारण मन में अभिमान भर रहे थे। तात्पर्य कि आगरा में सब जहां देखो वहां ही इस महा वीरा ही का गुण-गान गाया जा रहा था। स्वयं शाहजहां इस बात को जान गया था कि मैं इस बे मतलब और नाजायज़ काम को कर के दुनिया में बदनाम तो नहीं हुआ हूँ लेकिन दुनिया के दो दमोह और मज़ीम-असमान इसकी नूरों की बदौलत हिन्दू और मुसलमान दोनों की नज़रों से गिर गया हूँ। पर ऐश की बेहद ख्वाहिशें उसके अंग-अंग और रग-रग में फैली हुई होने के कारण वे उसके इन ऊँचे भावों को पनपने नहीं देती थी। उसके दिल में रात-दिन इनका उतार-चढ़ाव बना ही रहता था। लोगों की बेहद बहादुरी को वह इन्सान की बहादुरी के बाहिर की बात मानता था। उसकी आँखों के सामने हर वक्त कितने ही लोगे तलवार चलाते नज़र आते रहते थे। तलवार चलाने की उसकी चञ्चलता की याद कर डरने लग जाता था पर मन ही मन तारीफ भी करने लग जाता था। प्राय लोगाजी और सतियाजी के इस भाग्योदय जुलूस में हिन्दुओं की शान शौकत को देख उसकी जलन मिट ईर्षाग्नि भड़क उठी। वह मन ही मन कुढ़ने लगा।

सवारी नगर में से धीरे-धीरे पार होती हुई अपार भीड़ के साथ भगवती कालिंदी के उस तट पर आ पहुँची। चिता की एक ओर अपनी-अपनी पंक्ति में क्षत्री सेना और दूसरी ओर प्रेक्षकगण स्त्री पुरुषों के अलग-अलग समूहों में खड़े थे।

अत्यन्त कांतिमान् सती भटियानी अपने परमपूज्य जीवनाधार पतिदेव के मस्तक को अपने दोनों हाथों में और धड़ को गोद में धारण कर चिता में विराज गई।

महाराजा, उनके बाद समस्त उमराव और सरदारों ने नरदेव तोगाजी और सतीकी विधिपूर्वक पूजा की। पश्चात् नियमानुसार सैनिक प्रणाम एवं प्रेक्षकगणों की ओर से दर्शन-पूजन इत्यादि करने की क्रियाएँ समाप्त होगई। तब सोलह कर्मठ ब्राह्मणों की एक मण्डली ने महाराजा गजसिंह के हाथों अन्त्येष्टि संस्कार का संपादन करवाना आरम्भ किया। चिता में विराजी हुई अत्यंत प्रकाशमान श्वेत-वसना महासती भटियानी ने अपने प्राणपति के ध्यान में अपने मन को स्थिरीभूत कर दिया। सर्वत्र शान्ति छागई। भूदेवों के मुखारविन्द से मनोहर वेदध्वनि के अतिरिक्त कुछ भी सुनाई नहीं देता था। अन्त्येष्टि क्रिया-विधि समाप्त होने ही वाली थी कि एक भीषण अंधड़ ने एक प्रखर प्रकाश के साथ बड़े-बड़े शूरवीरों के पत्थर समान दिलों को दहला देने वाला घोर शब्द किया। सब हक्का-बक्का अस्थिर-बुद्धि होगए। क्षण-भर बाद अपनी व्यस्त दशा का परित्यागन कर ज्योंहीं स्वस्थ होतेहैं, चिता के पास गौर-वर्णा दिव्य तेजोमयी त्रिशूलधारिणी महामाया को खड़ी देखते हैं और साथ ही चिता के मध्य में भटियानी के दक्षिण भाग में नरदेव वीरवर तोगाजी सशीर्ष खड़े हाथ जोड़े दिखाई दिये। तोगाजी और भटियानीजी ने तुरन्त चिता से उतर कर महामाया के चरणोंमें साष्टांग प्रणाम किया। भगवती महामाया ने दोनों के मस्तक पर हाथ धर कर उन्हें उठाली

भावी है। माता जी ! अब हमे किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। इस पर भी आपका आग्रह है तो दो वस्तु मुझे भी दे दीजिये—एक तो यह कि मैं अपने प्राणनाथ की चरणसेवा से कभी किसी जन्म मे विलग नहीं होऊँ और दूसरा यह कि भारत की क्षत्राणियां मेरे प्राणपति के समान वीर पुत्रों को प्रसव करके अपनी कोख को उज्ज्वल करती हुई भारत मा का उद्धार करदे।"

महामाया ने कहा—'ऐसा ही होगा बेटी ! क्षत्री लोग ब्रह्मचर्यव्रत की दृढ़ प्रतिज्ञा रखते हुये एक पत्नीव्रत का पालन कर तुम्हारे पति और पति के जैसे पुण्यात्मा और वीर पुरुषों का स्मरण करते हुये ऋतुदान देंगे और क्षत्राणियां गर्भाधान के समय से प्रसवकाल तक अपने पति का प्रत्येक समय स्मरण करती हुई साथ में तुम्हारे पति और पति जैसे पुण्य श्लोक वीरों का स्मरण करती रहेंगी तो अवश्य उनका कुल और कोख उज्जवल होकर भारत भूमि का उद्धार हो जायगा।"

इतने में मीर खानजहाँ के साथ महाराजा गजसिंह ने भागते हुए आकर महामाया के चरण कमलों में साष्टांग दण्डवत् किया। भगवती ने उन्हें आशीर्वाद देकर वरदान दिया—"पुत्र ! तूने अपने उत्कट और सत्य उद्योग द्वारा अपने धर्म को निभाते हुए तोगा और भटियानी जैसे अनोखे वीरों को प्रगट कर आर्यजाति का मुख उज्ज्वल कर दिया। नरशार्दूल ! मैं तेरे से अत्यन्त प्रसन्न हू। तेरा वंश अधर्मियों का नाश करके भारत को स्वतंत्र और सुखी बनाने वाला होगा, एवं निष्कंटक राज्यभार वहन करने वाला होगा। गजसिंह! इसको स्मरण रखो ! मेरे गण वीरभद्र की भविष्य वाणी कभी निष्फल नहीं जायगी।

"पुत्र खानजहां ! तुमने अपनी स्पष्टवादिता और द्वेषरहित-भावना से अपने आर्य भ्राताओं के हृदयों में घर कर लिया है। तुम्हारे जैसे नेक

से शान एक क्षत्री जिन्दा रहकर किसी भी तरह से हासिल नहीं कर सकता था, जिसको कि आप दोनों आली नसब सरफ़राज़ों ने हँसते-हँसते कर दिखाया। आपको लाखों मुबारक बाद हैं। आपके जिस्म और क़दमों की ख़ाक को हिन्दू और मुसलमान अपने सरों में इख़्तियार करके दोनों क़ौमों में बिरादराना रिश्ता क़ायम करने का गरूर करेंगे। मेरी नाकिस राय के ख़ातिर आपने जो जौहर दिखलाया है, वह हिन्दू और मुसलमान सबके लिये इज़्ज़त गरूर की बात है।

मीरसाहब का कहना समाप्त होते ही महाराजा गजसिंह हाथ जोड़ कर कहने लगे— सतीजी! आप दोनू महामना मीरसाहब रा प्राणबचाव नैं वाँरै कहयाँ मुजब क्षत्रियाँरी बात राखण सारू अपणा प्राण दे दिया, कै जिणसू क्षत्रियाँ रो नाम संसार में ऊजलो हो गयो। आपरी बड़ाई कुण कर सकै? सूरज-चन्द्रमा है जठै ताईं आपरो नाम अमर रहसी। आपरी पवित्र भस्मी जो भागसाली अपणैं माथै चढावैला उणरै हीया रा नेत्र खुल जावैला। माताजी! अब आप कृपा कर म्हानैं ओ वरदान दिरावो कै आपरी महान कृपासू आपरै उजालियोड़ा रजवट नै मैला नहीं हुवण दां।"

एक दिव्य प्रकाश के साथ शब्द हुआ कि—'क्षात्र धर्म का पालन करते रहोगे तो अनोखी शान के साथ अमर विजयी कहलाओगे।"

उसी समय आकाश से पुष्प-वर्षा होने लगी। वह दिव्य तेज एक दीर्घ किन्तु सूक्ष्म ज्योति के रूप में ऊर्ध्वगति को प्राप्त हो गया। दिव्य-प्रकाश के लोप हो जाने के कारण उत्पन्न अंधकार को चिता की अग्नि धीरे २ दूर करने लगी। मारवाड़ की अप्रतिम वीरता रूपी पताका को भारत की राजधानी में सदा के लिये अद्भुत गौरव के साथ फहरा कर सब

के देखते-देखते उन दोनों महाभाग आत्माओं ने अपने को अनन्त आत्म
रूप अनंत एवं शान्त ब्रह्मार्णव में लीन कर दिया।

एकत्रित जनसमाज ने उन मुक्तजीवन आत्माओं की भस्मी को सि
पर लगाकर अपना अहोभाग्य माना और नीरव हर्ष एवं शोकाकुल ह्
में बार-बार उन्हें नमन करते हुए वहां से प्रस्थान किया।

卐

परिच्छेद १२ वां

अपना घोड़ा एक वृक्ष के पास खड़ाकर रघुनाथसिंह मेड़तिया ने कहा–" अन्नदाता ! अबै कँई करणों चाहीजै ? फिर-फिरनै हैरान होगयो मारग तो लाधो ही नहीं !"

महाराजा ने कहा– "कँई बात नहीं ठाकरा ! अबार भाकफाटा मारग लाधजावैला। आज अपानै निगै नहीं रही, वाणिया-फूटावणों-तारो ऊगो उणनै आपा परभातियो-तारो समझलियो। घड़ी सातनै सूझाको हो जावैला जरा मारग सोध काढ़ाला। महेशजी ठाकरा ! आज म्हारै भेला थेही भूल गया, थे तो पूरा जाणवीण हो। थानै अठै रहता नै दस-बारह बरस होगया है, आगरा रो भाटो-भाटो नै रू'खड़ो–रूखड़ो थांसु छानो कोनी।"

महेशदास–"खमा जोधाणनाथ ! आज गरीबपरवर आंपै बेगा निकल गया, सो म्हनै तो भेरा आवण लागगई जिणसू मारग री ठा' रही नहीं।"

रघुनाथसिंह–"अनदाता ! म्हारै मे ही यू' हिज बीती है।"

- महा०–"जरै पछै म्हे था मगलां सू न्यारा थोड़ा ही हा।"

रघुनाथसिंह, महेशदास और अन्य अश्वारोही महाराजा के ऐसा कहते ही हंस पड़े। परस्पर वार्तालाप और हर्षालाप करते करते प्रभात हो गया। महाराजा ने कहा–"बेलियां ! म्हारो ख्याल है कै आंपै ऊँधणी कांनी चालां तो कँई नहीं तो जमनाजीरो काठो तो आही जावैला नै जमनाजी कनै पूग गया तो मारग ही लाध जावैला।"

सबने कहा–"खमा ! यू हिज करणों ठीक रहवैला, अन्नदाता !"

ऐसा कह कर सब उस ओर चलने लगे। तनिक देर बाद एक घने और सुन्दर उपवन में प्रवेश कर उसके शीतल और सुरभित समीर

का आनन्दोपभोग करते करते क्रमशः निवाविनी भगवती कालिन्दी के तट पर आ पहुँचे ।

मोहन —"अन्नदाता ! आज आपँ मरकत-मुकता सी शोभ आवणता । "

महा —"बात तो वाजिब है पिण कोई हरज है । जरा देखो ! कैसी रमणीक है ? मेघविना शरकरी ! इणिज घड़ै हिज बात तो कैवो !"

रघु —"अन्नदाता ! नहीं तो इणी वैगो करीजै वै नहीं बणै बणीजै । समरूसार री बात तो न्यारी है पिण रोजीणा नहीं बणीजै ।

इतने में मोहनदास अपना घोड़ा जरा बढ़ाके कहने लगा—"अन्नदाता बठै तो कोई महात्माजी री कुटिया निजर आवै है ।" अपना घोड़ा बराबर में लेकर हाथ के संकेत से बताने लगा— 'सामला कांठा ने केणा रै बिच में छिपा एक पर्णकुटि देखीजै है उपरा मू डा आगे जमुनाजी री तीर ऊपर एक महात्मा विराजिया दीसे है ।

महा०—"हाँ देखलिया मोहनजी ! तो अबै अठी हुय ने मत चालो । आश्रम केड़ै रावने घोड़ाँ-घोड़ाँ हालो सो महात्माजी ने ठा नहीं पड़ै । कारण महात्माजी ध्यान में बैठा है ।" सब ने कहा— 'इसी काणी कुटि रै आरै होयनै हालणों चाहिजै ।"

ऐसा कहने के साथ ही सबने अपने घोड़ों को बाईं ओर से लिया और आश्रम की सीमा से दूर दूर चलकर उसके समाप्त होते ही पुनः जमुना जी के तट पर चलने लगे । बीणा वाली बात तो एक मधुर मालस्वर कर्णगोचर होने लगा । सबने अपने घोड़ों की गति मन्द करदी । आगे चलकर जब आवाज बहुत ही नजदीक आगई तो महाराजा के संकेतानुसार घोड़ों से उतर कर सब एक सघन वट-वृक्ष के नीचे की झाड़ी में छिपकर बैठ गए । उनमें नौकर ने सबके घोड़ों को कुछ दूर ले जाकर वट-वृक्ष की शाखाओंसे बांध दिए और वह उनकी निगरानीमें बैठ गया । महाराज

ह पास बैठा हुआ पीरू भादी कहने लगा—"अनदाताजी ! चीज ने राग
ो फटरी है, कठ तो जाणै कोयल हीज बोलवा डुकी । ओ डफालियो
थे मीम मे आयनै किण नै सुणावै है ।" महाराजा उसकी बात को
काट कर धीरे से कहने लगे—बोलो रह, बड़ा आदमी ! थू तो समभणा
गी पूछड़ी बणियोड़ो है कै ? बिना बतलाया नै बिना समझिया कोई बात
नहीं करनी चाहीजै नै किणी नै भूंडो-भलो नहीं कहवणो चाहीजै ।
पीरू ! थनै ठा' है—गावै जिके कुण है ?"

पीरू०—' म्हें तो ओलखिया कोनी बापजी ! चूको परो गरीबपरवर"

महा०—' थाछो, सबै सुणा । चीज कँईं गावै है जाणै हमरत
बरसै है । थिमदिम थिमपिस पछै करजो, थोड़ी बार छाना-माना सुणो ।"

सब— 'जो हुकम—अनदाता !"

देश ऐसा खोजने से भी न पावोगे कहीं,

श्रेष्ट सबसे आर्यभूमि सी न पावा तुम कहीं ॥ टेर ॥

द्वारिका जगदीश बदरी और रामेश्वर महा

हरिद्वार काशी गया त्रिवेणी सम तीरथ नहीं ॥ १ ॥

नर्मदा सिंधु सरस्वती कावेरी कृष्णा जहां,

पतितपावन गंग जमुना सी न नदियां है कहीं ॥ २ ॥

राम कृष्ण भीष्म अर्जुन भीम कर्ण युधिष्ठिर,

व्यास शंकर द्रोण सम तुम विद्वता पावो नहीं ॥ ३ ॥

शिवि दधी ध्रु हरिश्चन्द्र अंबरिष प्रहलाद सम,

भक्त दानी है कहा ऐसे दिखा दोगे कहीं ॥ ४ ॥

स्वार्थ त्यागी भक्त-स्वामी वीर दुरगादास से,

वीर सांगा शिव पत्ता गुरुसम यती है ना कहीं ॥ ५ ॥

सुमती सीता शैलजा गाधारी द्रुपदी समान,

वीर भटियानी सी पावन नारिया ना है कहीं ॥ ६ ॥

साहिबा ! हां बीबी ! आज तुम भी कोई ऐसी ही चीज सुना दो तो बड़ा मज़ा रहेगा। "

बीबी—हां अजीज शौहर ! अगर दिलरुबा आप बजायें तो मैं भी एक चीज सुना दूं। लेकिन इधर कोई आ तो न जाय ? "

मीर—इतनी दूर जंगल में और इतने सवेरे कौन क्या लेने का यहां आयेगा बीबी ! लो तुम कहो मैं दिलरुबा बजाता हूं। "

मीरसाहब के कहने के साथ ही दिलरुबा बजनेलगा और बीबी साहिबा गाने लगी—

भले हों भिन्न-भिन्न अभिधान।
एक देह के भाग हम दो हिंदू मुसलमान ॥ टेर ॥
द्वेष भाव का नाम कहां कहां ? जहां हैं सर्व समान ।
ईश्वर एक है नाम भिन्न है—राम और रहमान
सभी धर्मों का यह फरमान स्नेह का करो सदा सनमान ॥१॥
हिंदू मुसलमान मिल चालें, स्वतंत्र धर्म-विधान,
हिंदू मुसलमा सहित हमारा स्वदेश हिंदुस्तान।
हम हैं एक मात संतान हमारा बंधुभाव में ध्यान ॥२॥
मत्सर-मदिरा त्याग, करें हम, स्नेह सुधा का पान।
सुखदुख में एकत्र रहें हम यही सत्य अभिमान,
भिन्नता हरदम हरती प्राण, एकता करै सदा कल्याण ॥३॥

मीर०—"नेक बीबी ! तुमने तो आज कमाल की भी कमाल करदी। क्या भाव भरे हैं ? पाक-परवर दिगार— इन दोनों कौमों को यह दानिशमन्दी दे कि जिससे वे इस रिश्ते को अपने में बखूबी क़ायम कर सकें। बीबी साहिबा ! हवाखोरी का ऐसा लुत्फ तो कभी नहीं आया होगा। "

बीबी०—आपने दिलरुबा भी तो खूब ही बजाया।

मीर —मेरा दिलरुबा मेरी दिलरुबा के साथ नाचने में मजा कभी कैसे रख सकता था। वह तो आना जुमाने में ही मिल गया था उसने भी अपनी मुराद आज पूरी पाई है। बीबी! दर हकीकत तुमने यह गाना बड़ी रगबत और शाइस्तगी से गाया है। खुदा तुम्हारी इन मुरादों को पूरी करे।

बीबी —"आपकी दुआ है मशीर-उल-मुल्क!"

मीर —"बीबी! हमारे इन नवाबों को लिहाज अगर सच पूछा जाय तो यह सब आपकी " हिन्दुओं की देन है। ये काम इस दर्जे के पाक, मासूम और बहादुर होते हैं इस हद तक मैंने इन्हें नहीं जाना था। बेक-नम्बर कुमार सोमा और मनिवाली ने तो इशारा पकड़ कर दिखा दिया। जिसने साबित-कदम, आली हिम्मत और बुलंद हौसला का यह सबूत था—बयान नहीं होसकता।"

बीबी — खुदावन्द! जब महाराजा गजसिंह और उनकी रानी इस जौहर को दिखाने के लिये तैयार हो गये थे तो ये ही इसे कर दिखाते। काफी उम्र के हैं सब कुछ देख चुके हैं। ये दोनों जीव-जन्तु ना जिन्दा रहना तो अच्छा था।"

मीर —महाराजा तो तैयार ही थे। लेकिन सभी खास दरबारों ने उन्हें ऐसा करने से इनकार कर दिया, क्योंकि इस वक्त शाही दरबार में इनके जैसा काबिलमंद मुशीर और रहनुमा कोई रईस नहीं है। खुद शाहजादे इन्हें बहुत मानते हैं। बादशाह जहांगीर के वक्त में शाहजादे (शाहजादा खुर्रम) जब बागी होगया था तो उस वक्त जितनी ही बार जंग की जबाबदारी में महाराज ने मुकाबिला कर शाहजादे के दांत खट्टे कर दिये थे। लेकिन जब शाहजादे को तख्त मिला तो महाराज को बड़े आदर के साथ जोधपुर से बुलाकर खिलअत और मनसब देकर इनका रुतबा बढ़ाया था। इस जौहर को दिखाने के लिये अगर कोई दूसरा बड़ा

नहीं होता और उस हालत में महाराजा अगर ऐसा करने को तैयार हो जाते तो खुदा जाने क्या होता ! लेकिन मेरा तो ख्याल है कि खुद शाहजहा ही इन्हें वैसा करने से मना कर देते। अरे ! आफताब निकल आया ? आश्रम से भी काफी दूर है, अब चलो न ?

बीबी०—आज तो दिन भर यहीं ठहरने का है फिर क्या जल्दी है ?

मीर०—यह तो ठीक है, लेकिन महात्माजी अपने ध्यान से फारिग हो गये होंगे तो वे इन्तजार करते होंगे ? उनका वक्त कितना कीमती है ! अपनी थोड़ी सी गलती से उनका कितना हर्ज होगा ! अपनी बातें वहीं दिन भर होती रहेंगी। ऐसा कहकर मीर साहब अपनी बीबी का हाथ पकड़े हुए धीरे २ आश्रम को चले जाते हैं। तब महाराजा गजसिंह और उनके साथी झाड़ी से बाहर निकलआते हैं और अपने अपने घोड़ों पर सवार होकर जिस मार्ग से आए थे उसी मार्ग से लौटने लगते हैं।

रघु०—अन्नदाता ! मियां-बीबी दोनू एक सिरीसा हीज निकलिया। कैड़ा सुध मिनख है ?

महा०—भाई ! परमात्मा जोड़ो मिलाय देवै है। तोगाजी नैं भटियाणीजी री जोड़ी कँई कम मिली ? पूरबला भव रा लेणिया-देणिया री बात है रघजी ! भेला धूणी तापियोड़ा रया। साथ कीकर छूटै ? श्रो सजोग भी तो देखो कै रोजीना छ कोस दूर ऐड़ा बीड़ में आयनै महात्माजी रो उपदेश सुणणो नैं आपै हिन्दू होय नै एक हिन्दू महात्माजी री सेवा मे हाजर नहीं हो सका। कित्ती भूल नैं शर्म री बात है ? म्हारो तो विचार है कै आपै रोजीना हवा खावण रै मिस अठै हिज आवा पिण एक तकलीफ है—मीर साहब रोजीना जनाना समेत आवता होवैला जरैं तो आपै नहीं आ सकाला साझ रा तो आ सका हां। पिण किणी तरह मीर साहब रै साथै अघीजै तो ज्यादा ठीक रहवै क्यु कै ऐड़ा प्रेमी सज्जन रै साथै सत्सग करण रो खूब आनन्द रहसी। आज साझ रा प्रसंग चलाय नैं

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	१४	अज्ञान रूपी प्रज्ञान की दीपक	अज्ञानरूपी दीपक की
४	१	बता गया	बताया गया
७	१६	दवियोड़ानै दयावणा री	दवियोड़ा नै नई फेर दवावणारी
११	३	प्राक्रमपूर्ण	पराक्रमपूर्ण
१८	७	दरबा भरा गय	दरबार भरा गया
३०	२४	देवांसी-सिर-छात्र	देवाशी-सिर-छत्र
४१	२३	वीरा आपरै	वीरा रा आपरै
४२	२३	जाया आपरै	जाया। आपरै
४६	२०	पनड़्यां	पनड्यां
४६	२१	नोबरिया	नोघरियां
४६	२१	पुणछुआं	पुणछ्या
४८	४	देख रही थी	देख ही रही थी
५१	१६	जायो लागैला	जायनै लागैला
५१	२१	म्हौ आत्मसात	म्हारै में आत्मसात
५२	४	छिलका दिया	छुलका दिया
६१	८	सिखानैया	सिखावण रै
६१	११	मौर	मोर
६५	३	म्हारा सू की	म्हारासू की

८०	२	समझाओ	समझजो
८१	१६।१७	लगा कि जितना दीपक के	लगा जितना कि दीपक के
८२	८	बोला नहीं जाता	बोला नहीं जाता।
,,	१५	जवान	जवन
,,	१७	आयो है लुगाई और नै लुगाई	आयो है। लुगाई नै और लुगाई
८२	१६	जवानों	जवनों
८३		(प्रथम पक्ति पृ० ८२ की अतिम पक्ति ही है अत इसे तनुकूल समझें	
,,	६	तारतम्यता में गगा का प्रवाह	तारतम्यता में तुल्यता का प्रभाव
,,	६	होते ही आज मिनखा जनम	होतां ही आज मिनखा जनम
८४	१	पुरखव	पुरख्व
,,	७	वदाय	प्रदाय
,,	१०	वरे	बचे
,,	११	मान हस	मान होत
,,	१३	कथध	कर्थत्र
,,	२०	विद्याच्भियं	विद्याच्वियं
,,	२१	साथी	साथ
,,	२१	(२) राजत (३) वाजत	(२) रायत (३) पाजत
,,	५	खिस्यो	खिस्यो
,,	१३	सो गये	सो गये
,,	१४	बन्द आपके	मह भामकै

* कठिन शब्द कोष *

अजकां (१२) १शत्रुओं को, २ वीरों को
अजको (२३) चंचल, चैन रहित
अठी हुयनैं (१८) इधर होकर
अठेल (२१) खूब
अत्रखाधी-रो (८) व्यर्थ ही
अणी-रा रावता (२०) सेना के नायकों को
अवार (६७) अभी
अबै (८०) अब
अमल (२०) अफीम
अमल्ल (२१) १रौब २ आज्ञा ३ शासन
अमी (४०) अमृत
अवधारणरी (१४) पार लगाने की
अवलो (४६) उलटा
आपै (५४) दे देता है
आफू बटै (२१) अफीम बंटता है
आवधान (४१) गर्भाधान, गर्भ
उकत (६४) १ योग्यता, २गुण ३विवेक
४ मौलिक सूझ
उझालै (१२) छलकाता है
उणारा (७) उसके
उतारो (२८) ठहरने का स्थान
उपनियोड़ी (२६) उत्पन्न
ऊझलै (२१) छलकता है
ऊधमियो (३२) कमाया, प्राप्त किया
ऊबघड़ी (१४) अभी का अभी
ऐड़ी (२७) ऐसी
ओट (२०) शरण
ओड़ी (८) ओर
ओ'ड़ो (४२) उत्तर
ओलखिया (७७) पहिचाना
ओलणा (५६) साग, तिन्ना
ओस- सो (२३) यह सो
ओसरी (५८) द्वार के ऊपर बाहिर की ओर घास या खपरेलों का बना हुआ छज्जा, बरामदा
ओ–हिज (८) यही
औगाल [६१] कलंक
कऊ (५८] धूनी
कचोलां [२१] कटोरों में
कर-वरसणो [क] दानी
कसू बो [५७] अधिक मादकतार्थ गलती में छानकर तैयार किया हुआ परिशोधित अहिफेन-द्राव
काछ द्रढो [क] ब्रह्मचारी, जितेन्द्रिय
कांनी [२६,७५] ओर
क'लजे बिना रो [७] हृदयहीन
कीं [५८] कुछ भी
कीकर [५८] कैसे
कुड [५६] घास की छप्पर का बड़ा मकान, एक प्रकार का सुन्दर झोंपड़ा
कूड़ी [२४] झूटी
कूमटिया [५७] कूमट वृक्ष की फलियों के बीज
के [७] कई
केसरियो [४६] दूल्हा
कैर [५६] करीर के हरे फल

टांणों [२३] समय
ठा' पड़ै [४१,५०] मालूम हो
ठामोठाम (७५) यथा स्थान
ठाली (२६) मात्र
ठाहै लागणी है [५१] लक्ष्य पर लगनी है
डाफोलियो (६६) ढपोरसंख
डाढीक[४१] १ विवेकी, समझदार २ वृद्ध
डांचो [५८] लंबे पायों वाला बड़ा खाट
डावी कानी [६८] बांई ओर
डीकरी [२६] पुत्री
डोढ़ियां [४०] अन्त पुर
ढहूँ (२५) गिरा दू , मार दू
ढोलियो [५८] पंलग
तणी [२२] के
ताई [६५] तक
तिमणियो (४६) एक कंठाभूषण
तुराट [२३] घोड़े
तेगां (३७) १ भाटी क्षत्रियों के,
२ वीरों के
तेड़ो [७५] निमंत्रण
त्याग [३५] दान
थापण ध्रम्म-जूण [१३] [मनुष्योनि में इस कर्तव्य की पुन स्थापित करने वाला ।
थाली (५७) एक वाद्य

दड़ा [१२] १ सिर २ गेंद
दड़ावै [१] ठोकर मार कर खेलता है
दिसा (७१) सम्बन्ध में
दिसि [१३] दिशाए
दुढालियो [२६] दो ओर ढलुवां छत वाला खपरेलों से छाया हुआ घर
धकला [७२] अगले
धकै [६८] आगे
धधक [१२] क्रोधाग्नि
धव (२८) पति
धार (३५) युद्ध
धूड़धाणी (२६) सत्यानाश
नवाई [६३] नवीन
नवै-मानखै (५१) नये मनुष्य जन्म में
निम्र (३५) निज
निपजनै ऊभी रहै (७१) हो जाय
निसड़ाई [३०] निर्लज्जता
नीठ (२३) कठिनता से
नें' तो (७) निमंत्रण
नै (१०) १ और २ करके ३ को
नोघरियां (४६) पहुचे का एक आभूषण
नौकोटी-मारवाड़ (५७) नौ प्रसिद्ध दुर्गों वाली मारवाड़ देश
पड़वो [५०, २६] घास या खपरेलों से छाया हुआ घर

माजनों (२५) प्रतिष्ठा
माजम (११) भंग के घृत से बनी हुई एक मिठाई
मांडाणी (४६) जबरदस्ती, विवश होकर
मावो (५८) अफीम आदि नशीले पदार्थों की मात्रा
मिनख बणूला (६२) मनुष्य जन्म को सार्थक करूंगा
मिसल [१८] पंक्ति
मींगणो (५८) ऊंट का सिगना
मुख-मिठ्ठ (क) मिष्टभाषी
मेलावड़ा (५?) मिलन
मोकला (४७) बहुत
मोजड़ी (५१) जूती
रखड़ी (४६) एक शिरोभूषण
रखोपा (२५) रक्षा
रङ्ग (२०) अहिफेन-गोष्ठी में अफीम और कसूंबे को लेने के पूर्व अपने इष्ट और महापुरुषों को निवेदित करने की विधि और प्रथा (२६) धन्य
रजपूति रावट मैं (८) क्षत्रियत्व की आन को
रजमों राखता थकां (७) रजस्व रखते हुये
रजवट (८) क्षत्रियत्व, क्षात्रधर्म
रणा-बंका-राठोड़ (२३) मारवाड़ राज्य का आदर्श वाक्य
राज (४८,८८) आप श्रीमान
राज रो (२७) राज्य का, हमारा
रावलो (५६) जागीरदार का मकान
रिजक (२) आजीविका
रिड़ी [५२] पथरीली (पहाड़ी) ऊंचीभूमि
रिधू (२१] निश्चय
रिब रिबने (२६) लम्बी बीमारियों से अत्यंत दुखी होकर
रिमां (२२) शत्रुओं को
रिहांण (५६,७६) अहिफेन गोष्ठी
रीझ (३३) १ इनाम २ दान
लाख हुवा (३४) लाखों से
लारलो (–लो)(१८८) शेष
लारां (२८) पीछे
लुगाई (८२) १पत्नी २ स्त्री
ल्हावो (१०४) आनन्द
वट (८) १ मार्ग २ आन
वडपण चीलो (१२) बडेरों का मार्ग
वठणो (२८) फंट जाना
वणियां विखमी वार (५४) संकट आनेपर
वतावै (१२) बतलाता है
वधाऊ (४७) १ स्वागत योग्य २ श्रेष्ट ३ विशेष
वहीर (५०) प्रस्थान, पारकणी